लेखक पुष्पांक २६

ॐ

यन्त्र-मन्त्र-कल्प संग्रह

जिसमें

प्राचीन यन्त्र-मन्त्र-कल्पादि का विधि विधान
व आम्नाय सहित संग्रह है

卐

प्रकाशक :-

चंदनमल नागोरी जैन पुस्तकालय
पोस्ट—छोटी सादडी (मेवाड़)

सम्पादक —

चंदनमल नागोरी

कीमत दस रुपया

मुद्रक :-
ईश्वरलाल जैन स्नातक
आनन्द प्रिंटिंग प्रेस
गोपालजी का रास्ता जयपुर

विज्ञप्ति

यत्र-मन्त्र-कल्प मग्रह में तीन विभाग किये गये हैं। प्रथम विभाग में यन्त्रों का सग्रह है जिनमें से नम्बर ४७ तक के यन्त्र मेरे दादामह श्रीमान् जालम चन्दजी नागोरी के सग्रह में मे प्राप्त हुए हैं, और जय-पताका विजयपताका, वर्द्धमानपताका यन्त्र प्राचीन जैनग्रन्थों में से प्राप्त हुए हैं, इस तरह के सग्रह-साहित्य का जनता को लाभ मिले इस हेतु मे प्रकाशित कराया है।

दूसरे विभाग में मन्त्र सग्रह है, और बताये हुए मन्त्र आराधन करने वाले के लिए विशेष लाभदाई प्रतीत होते हैं जिन भव्यात्माओं को मन्त्र शास्त्र पर श्रद्धा है उनके लिए यह प्रकाशन उपयोगी होगा।

तीसरे विभाग में कल्प सग्रह है जिनमें मे लोगस्स कल्प तो सवत् १९६७ में श्रीमती लाभश्रीजी महाराज द्वारा एक भडार में से प्राप्त हुवा था, और सहदेवी कल्प मगल कल्प, धम्मोमगल कल्प, सुवर्ण सिद्धि कल्प प्राचीन भंडारों में से अनायास प्राप्त हुए हैं, और बीशायन्त्र कल्प पूज्य मुनि महाराज श्री न्याय सागरजी ने प्राचीन पत्र-प्रत-आदि का सग्रह किया है उनमें से

हैं, जो प्रसङ्गोचित प्रकाशित कराने का विचार है, इस समय प्रेस की असुविधा और कई प्रकार की कठिनाइयों को पार करते यह प्रकाशन कराया है, प्रूफ सशोधन में पूरा ध्यान रखा गया है, फिर भी अशुद्धिया रह गई होंगी, क्योंकि हमने यह भी अनुभव किया है कि यन्त्र पर गए बाद भी मात्राएँ-अक्षर गिर जाते हैं और कई बार वैसे ही छप जाते हैं जब ऐसा देखने में आता है तो दुःख होता है परन्तु क्या किया जाय बेबस बात हो जाती है, अतः पाठकगण जहा भी अशुद्धि देखें उसे सुधार कर पढें।

प्रकाशन में प्रोत्साहन उन्हीं लोगों को मिला करता है कि जो धनिक वर्ग के सम्पर्क में आते रहते हैं, जिनको प्रकाशन में सहायता नहीं मिलती उनका संग्रह किया हुआ साहित्य उपयोगी भी हो तो प्रकाशित नहीं हो पाता, इस पुस्तक के प्रकाशन में हमें विशेष हानि हुई है, दो वर्ष पहले दो फार्म एक प्रेस में छप जाने बाद हमारे लिये हुए बावनपौंड के ड्राइंग पेपर किसी दूसरे काम में ले लिये और फिर वैसा कागज नहीं मिला-इस नाराजगी से दूसरे प्रेस को काम दिया तो एक फार्म छाप कर उन्होंने भी हमारे साथ उचित व्यवहार नहीं किया।

पुस्तक छपवाने के हेतु कई महिने बम्बई ठहरना पड़ा इस तरह की कठिनाइयों से हम इस पुस्तक को समय पर प्रकाशित करवाकर ग्राहकों को नहीं दे सके जिसके लिये क्षमा मांगने के सिवाय और उपाय ही क्या है ?

इस तरह के साहित्य को प्रकाशन करने के लिए मुनि महाराज श्री जिनभद्र विजयजी साहब ने उत्साहित किया और श्रीयुत् मगुभाइ हरजीवन दास बम्बई निवासी ने उत्साहित कर ग्राहक बनाये एतदर्थ धन्यवाद दिया जाता है।

प्रकाशन की सारी कृतियां प्राचीन हैं इसमें हमारा कुछ भी नहीं केवल संकलना मात्र करने का परिश्रम किया गया है सो आपके सामने रखते हैं, जिसका श्रेय आप्त पुरुषों को है।

इस पुस्तक के प्रूफ देखने व समय पर कार्य करने में आनन्द प्रेस, जयपुर के प्रोप्राइटर पंडित ईश्वरलालजी ने खूब ध्यान दिया है इस लिए धन्यवाद देते हैं।

निवेदक—

चैत्र सुदी १ चंदनमल नागोरी

सम्वत् २००८ पो० छोटी सादड़ी (मेवाड़)

अनुक्रमणिका

इस पुस्तक के सम्पादक की सम्पादित

प्रकाशित पुस्तकों की सूची

नं	नाम	कीमत
१	चतुर रम्भा और कामी भरतार	० ४-०
२	दुमोपपिकुग	० ४-०
३	वस्त्रवर्ण सिद्धि	०- ८-०
४	मेवाड़ के नव युवकों के प्रति संदेश	भेट
५	जसलमेर में चमत्कार (गुजराती)	०- ७-०
६	,, दूसरी आवृत्ति	०- [illegible] ०
७	केसरियाजी तीर्थ का इतिहास	०-१२-०
८	,, दूसरी आवृत्ति	०-१२-०
९	नवकार महामन्त्र कल्प	१ ०-०
१०	,, दूसरी आवृत्ति	० ८-०
११	ऋषि मंडल स्तोत्र भाषार्थ आदि	१ ८-०
१२	[illegible] त्याग	भेट
१३	ज्ञान गंगा	[illegible]-०
१४	जैन [illegible]	०- ३-०

१५ नवकार महामन्त्र कल्प तीसरी आवृत्ति	१-८-०
१६ स्नात्र पूजा सार्थ	०-६-०
१७ दर्शन न्याय स्तवन माला	१-०-०
१८ सामायिक रहस्य (गुजराती ३०००)	भेट
१९ सराक जाति और जैन धर्म	भेट
२० सराक जाति अने जैन धर्म	भेट
२१ देवसिराई प्रतिक्रमण सूत्र सार्थ शब्दार्थ भावार्थ रहस्य हेतु सहित	१-८-०
२२ दूसरी आवृत्ति " "	१-८-०
२३ वर्षीतप महात्म्य	भेट
२४ नवाणु यात्रा महात्म्य	भेट
२५ जगसिंह शेठ	भेट

२६ से २८ पुस्तकों में पुष्पाक नहीं छपा है।

- २६ जिनेन्द्र गुण स्तवन माला
- २७ द्रव्य प्रदीप हिन्दी अनुवाद
- २८ नीमच बतीसी

२९ यन्त्र-मन्त्र-कल्प संग्रह	१०-०-०
३० ऋषि मण्डल यन्त्र २३ इंच का	०-८-०

अप्रगट पुस्तक सूची

१ अन्तराय कर्म की पूजा सार्थ कथा सहित
२ गृहस्थ धर्म, कलिकाल सर्वज्ञरचित का
हिन्दी अनुवाद
३ अट्ठाई व्याख्यान
४ नमस्कार महामन्त्र महात्म्य
५ समकित प्रदीप—अनुवाद
६ घंटाकर्ण कल्प—विधान सहित

नमस्कार महामन्त्र महात्म्य

यह पुस्तक कई मूल-सिद्धांत और ग्रन्थों की सहायता से लिखा गया है। एक एक अक्षर दो दो के अक्षर पदच्छेद आदि का पूरा वर्णन है पंचपरमेष्ठि में वर्ण किस प्रकार घटित होते हैं सो समझाया गया है सिद्धावस्था में वर्ण किस प्रकार से होता है और पंच परमेष्ठि के वर्ण के साथ आत्मा का वर्ण का कितना गाढ संबंध है जिसका खुलासा किया गया है पुस्तक पढ़ने योग्य है। छप रही है।

पता—
चन्दनमल नागोरी जैन पुस्तकालय
पोस्ट— छोटी सादड़ी (मेवाड़)

❀ यंत्र-विशिष्टता ❀

पुस्तक की तैयारी चल रही थी इतने में सयोग-वश बहुत पुराने समय में लिखे हुए जीर्ण पत्र मिले जिनमें यत्र विषयक छद लिखा हुआ है कुछ तो कागज फट गया है और जीर्णता इतनी आई हुई है कि पत्रों को पढ नहीं सकते छंद की पूरी नकल छपवाते तो हमें विशेष हर्ष होता परन्तु वेबस बात है फिर कुछ साराश जो हमारी समझ मे आया है उसका वर्णन इस प्रकार मे है।

(१) लारे लाय न कर जले, शत जीते सग्राम । गर्भावास पड़तो रहे।

(२) शत यत्र सर्व व्याधि जाय।

(३) छत्तीसे जुवा जीते सही। चोतीसे तस्कर न लागही।

(४) दससे प्रीत न टूटे, वहोतरे वदीवान ज छुटे, चालीसे टीडी नहीं लागे, बावन झगड़ा हार न आवे, जोगणी दोष चोसठ नासे, वदेवाद··· सत्तारमें वुध वधे अति जोरी।

इस प्रकार के वर्णन से यत्र महिमा पर और भी

चिरवास बैठता है, सातियें यंत्र से अग्नि प्रकोप नहीं होता सौ के यन्त्र से व्याधि नष्ट होती है और बत्तीसा जुआरी को या सट्टेबाज को बहुत उपयोगी होता है चोतीसे यन्त्र से चोर भय मिटता है। एक हजार का यंत्र टूटी हुई प्रीत का अनुसंधान करता है बहोत्तरिया यंत्र के प्रभाव से बंदीवान छुड़वाने में सहायता होती है, चालीसा यंत्र विधि सहित लिख कर मैं रख देवे और किसी वृक्ष के ऊपर लिख कर या पेट को वृक्ष पर बांध दिया जाय तो टिड्डिया नहीं बैठती और नुकसान नहीं होता बावन का यंत्र पास में रखने वाला झगड़ा जीत कर आता है चोसठ के यन्त्र से योगनी का उपद्रव नष्ट होता है और पचासिया यंत्र से बुद्धि तीव्र होती है हजार अठावी याद आजाती है इस तरह से यंत्र के तीस पद्य लिखे हुए हैं इनका सारांश लिखने का यह मतलब है कि यंत्र महिमा एक प्राचीन पत्रों में इस प्रकार लिखा मिलता है। अस्तु

श्री जैनाचार्य श्री भट्टारक जिनऋद्धि सूरीश्वरजी महाराज

जिनके करकमलों से एक आचार्य एक उपाध्याय
पद प्रदान हुआ है।

समर्पण-पत्र

श्रीमान् स्वर्गस्थ आचार्य देवेश भट्टारक

श्री जिनऋद्धि सागर सूरिजी महाराज

गुरुदेव !

आपकी कराई हुई जिन प्रासाद प्रतिष्ठा के अनेक शिलालेख आपकी अमर गाथा का स्मरण करा रहे हैं और शासनोन्नति के कार्य जो आपके द्वारा हो पाए हैं वह भी चिर-स्मरणीय हैं अतः स्मरणांजली रूप यह आप्त पुरुषों की कृति का संग्रह समर्पित है सो स्वर्ग में स्वीकार कर अनुगृहीत करिएगा।

आज्ञांकित सेवक —

चदनमल नागोरी

छोटी सादडी (मेवाड)

वीराय नित्यं नमः

यन्त्र - मन्त्र - कल्प संग्रह

—o:o—

यन्त्र मन्त्र के जिज्ञासु महोदय !

आपसे निवेदन है कि ससारी आत्माओं को अनेक प्रकार की विडम्बनाएँ लगी रहती हैं, और उनको दूर करने के लिए कई तरह के प्रयत्न किये जाते हैं, उन प्रयत्नों में से एक प्रयत्न यन्त्र मन्त्र द्वारा देव की सहायता से दु ख दूर करने की इच्छा भी है, और ऐसी इच्छाएँ कब होती हैं कि जब हम सब तरह के प्रयत्न करके थक जाते हैं फिर देव की सहायता लेना सूझता है। देव को प्रसन्न करने के, आकर्षित

करने के उपाय मन्त्र यन्त्र ध्यान पूजा, स्तवन भेंट आदि मुख्य माने गये हैं, इस प्रकार के विधान में विशेष रूप से विश्वास होने से श्रद्धा जम जाती है और पुरुष ऐसे कार्यों में दृढ़ चित्त होकर निज प्रयत्न में विजय पाता है, इसके बहुत से उदाहरण शास्त्रों में प्रतिपादित हैं।

यह सब करने से पहले एकाग्र ध्यान के लिए तैयारी करते सात प्रकार की शुद्धि की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

यत—

अङ्ग वसन मन भूमिका, द्रव्योपकरण सार।
न्याय-द्रव्य-विधि-शुद्धता, शुद्धि सात प्रकार ॥१॥

भावार्थ—आराधना करते समय शरीर, वस्त्र, मन, भूमि, उपकरण द्रव्य-सामग्री, और विधि-विधान अर्थात् क्रिया यह सातों ही विशेष शुद्धमान होगा तो आराधना भी शुद्ध हो सकेगी।

बहुत बार ऐसा भी होता है कि दुखी मनुष्य अपनी साध्य दृष्टि से शीघ्र ही सिद्ध करने के हेतु, विधान

कुछ कम हो पाया हो तो भी उसकी तरफ ध्यान नहीं देता और फल सिद्धि देखने को उत्सुक रहता है। इस तरह के शीघ्र स्वभावी साधक पुरुष को ध्यान दिलाने के लिए कहा है कि,

यथैवा विधिनालोके, न विद्या ग्रहणादि यत् ।
विपर्यय फलत्वेन, तथेदमपि भाव्यताम् ॥२॥

भावार्थ—अविधि से ग्रहण की हुई विद्या मन्त्र यन्त्र तन्त्र आदि कुछ भी हो, विधान रहित ग्रहण की है तो वह विपरीत फल देगी इसलिए लोकमें विद्या चाहे जिस तरह ग्रहण नहीं की जाती अर्थात् इस तरह की शीघ्रता व अविधि को अग्रहित माना है।

उपर्युक्त कथनानुसार विधान को पहले सम्पूर्ण समझ कर साधन करना चाहिए जिस मनुष्य से विधान बराबर नहीं होता वह असिद्धि में विद्याका दोष बतावे तो अनुचित है।

साधन करने से पहले लायक हो पाए हैं या नहीं ? इसका विचार अवश्य करना चाहिए। समझाने के लिए उदाहरण बताया है कि, औषधि पुष्टिकारक

और अनुभवी वैद्य द्वारा बनी हुई है परन्तु उसे पचाने की शक्ति शरीर में नहीं है तो औषधि क्या कर सकती है ? पचाने बाद भी रक्षा नियमन नहीं रख सकते हैं तो रोग नष्ट नहीं हो पाता और उल्टा बढ़ जाती है, ऐसी परिस्थिति उपस्थित हो तो औषध का और वैद्य का क्या दोष है ? ठीक इसी तरह समझो कि यन्त्र-मन्त्र का सिद्ध करने के योग्य नहीं हो पाए हो—अथवा सिद्धि होने के पश्चात् भी सिद्धि का अनुचित उपयोग किया जाय तो प्राप्त सिद्धि भी नष्ट हो जाती है। देव-अधिष्ठायक सात्वकी से अधिक उपयोग वाले होते हैं और वह अनिष्ट कार्य में सहायक नहीं होते अतः साधक पुरुष को इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

मन्त्राधीन देव होने से सहायक होते हैं परंतु साथ ही पुरुष की प्रबलता भी होना चाहिए एक उदाहरण से समझ लो कि दो बालकों का जन्म एक ही दिन एक ही घड़ी एक लग्न इस में हुआ हो और ग्रहमान कुण्डली भी एकसी हो परन्तु पुण्याई के कारण एक को राज्य मिलता है और दूसरे को पटेलाई मिलती है। दोनों अधिकार पाते हैं परन्तु पुण्य संचय के

अनुसार पाते हैं। जब पुण्य छूट जाता है तो मनुष्य कितने ही प्रयत्न करे सिद्धि नहीं होती, इस विषय में कहा है कि—

येषां भ्रूभङ्ग मात्रेण, भज्यन्ते पर्वता अपि।
तैरहो! कर्म वैषम्ये, भूपैर्भिक्षाऽपिनाप्यते॥

भावार्थ—जिन पुरुषों की भ्रकुटि-आंख के पलक फिरने मात्र से पर्वत का भी भंग हो जाता हो, ऐसे बलवान राजा को भी जब कर्म की सत्ता घेरती है तब भिक्षा भी नहीं पा सकते।

यत:—

जाति चातुर्थ हीनोऽपि, कर्मण्यभ्युदयावहे।
क्षणाद्रङ्कोऽपि राजा स्यात्, छत्र छन्न दिगन्तर॥२॥

भावार्थ—जाति और चतुराई से हीनता पाये हुए मनुष्य का जब अभ्युदय करने वाला कर्म उदय में आता है तो क्षणवार में ही रंक मनुष्य नन्द आदि की तरह जिनके लिए छत्र आकाश में घूमते हैं और वह पलक मात्र में ही राजा बन जाते हैं।

दोनों व्याहरण बराबर समझने योग्य हैं और ऐसा समझ कर कोई पुरुष निरुद्यमी की तरह बैठ रहे तो उसे फल नहीं मिलता उद्यम से दरिद्रता नष्ट होती है, और कई प्रकार के उद्यमों में देव आराधन का उद्यम भी भरत की प्राचीन संस्कृति के अनुसार आदर करने योग्य है।

यन्त्र-मन्त्र भी मनुष्य को-रोगी को औषधि की तरह कामयाब होते हैं। परन्तु जहां आयुष्य समाप्त होता हो वहां पर औषधि काम नहीं देती, इसी तरह से पापकर्म का उदय हो तो पुरुषार्थ का फल पापोदय की समाप्ति के बाद मिलता है। इसके कथन पर से समझ लेना चाहिये कि मन्त्र यन्त्र दूषित नहीं हैं। यह तो आप्त पुरुषों के बनाये हुए हैं, जिन पर विश्वास करना ही चाहिए परन्तु अपना चारित्र कर्म प्रकृति, और स्वभाव को भी देखना उचित है कि हम कहां तक योग्यता पा सके हैं इस तरह समझ कर साधना करोगे तो सिद्धि शीघ्र हो सकेगी।

॥ पन्द्राङ्क महिमा ॥

रामचन्द्र महाराजा ने जिस प्रकार पंपुष्पापुर से

मत्राक्षर की योजना की है, और जिनके ध्यान स्मरण मात्र से मत्रों के अधिष्ठाता देव प्रसन्न होते हैं तदनुसार अङ्क योजना भी की गई है, जिसके आलेखन को यन्त्र कहते हैं, और यू देखें तो मन्त्र-यन्त्र का जोडा है, जिस प्रकार मन्त्र शक्ति बलवान होती है, उसी तरह से यन्त्र शक्ति भी बलवान मानी गई है जब एक अंक के पास दूसरा अक लिखा जाता है तो दस गुणा हो जाता है, गिनती में नौ अक हैं और दशवीं मींडी आती है जिसको अनुस्वार भी कहते हैं। नौ अङ्क अपने गुण पर खड़े रहते हैं, और अनुस्वार का गुण गौण हो जाता है, इसलिए दूसरे अकों की सहायता बिना गुण का प्रकाश नहीं हो पाता, और जब सहायक मिल जाता है तो पूर्ण बल से निज सख्या प्रकाश में आती है। जोड के अनुसधान में भी अनुस्वार की गिनती नहीं की जाती परन्तु अन्त में सख्या बल दश गुणा हो जाता है। जिस प्रकार अक्षर के मिलान से ऐसे शब्द बनते हैं कि वह प्रार्थना रूप होने से, प्रार्थी की इच्छा को पूरी करते हैं, और ऐसे शब्द मनुष्यों को तो क्या—भगवान ! को भी वशमें करने की शक्ति

वाले होते हैं, जिसका खास कारण अक्षरों का मिलान और जिनके स्मरण मात्र से देव दानव राक्षस आदि सत्वगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी वश में हो जाते हैं, लेकिन योजना रोचक हो, संगीत, छन्द, कविता आदि वास्तविक राग रागणी सहित हो तो वह और भी शीघ्र फलती है। इसी लिए स्तोत्र मन्त्र यन्त्रादि की योजना राग मय होती है, जिसमें ह्रस्व दीर्घ पदच्छेद लघु गुरु संयुक्ताक्षर आदि का ध्यान रखना चाहिए और उच्चारण यथार्थ रूप से होता रहेगा तो विशेष आनन्द आयेगा उदाहरण से समझो कि एक विनंती साधारण शब्दों द्वारा की गई हो, दूसरी नम्रता पूर्वक भारवाही शब्दों में की गई हो तो दूसरी विनती का असर जल्दी हो जाता है, और तीसरी विनती कविता या छन्द में है जिसमें वास्तविकता के सिवाय अलंकार भी हों तो ऊँचे नीचे शब्द बोलने पर भी वह विशेष प्रियकर होते हैं, जिसके सुनने मात्र से ही प्रसन्नता आती है, भक्ति मार्ग इसी लिए मान्य है और ऐसी योजना अनादि काल से चली आती है।

ऊपर बताये हुए कथन के अनुसार अक्षरों के

मिलान में जो बल रहा हुवा हैं, उसी प्रकार अंक में भी है, और अंक योजना में इतना संप और संगठन है कि जो अक्षर योजना से अधिक आगे बढ़ जाता है। उदाहरण है कि जब एक अक्षर के साथ दूसरा अक्षर मिलाया जाता है तो उसका आधा रूप नष्ट हो जाता है, और जब एक दूसरे के साथ मिलने के लिए निज रूप को आधा किया गया है तो जिस अक्षर क शामिल वह मिल रहा है अपने में मिलाकर उस आधे अक्षर का सत्कार करता है, और जहा दोनों का एक साथ उच्चार होगा, तो पहिले उस मिले हुए आधे अक्षर का उच्चार में पहिला स्थान रहेगा इस प्रकार से अपने में मिलते हुए या मिलाते हुए अक्षर को निज रूप को घटा देना होगा, इस तरह की व्यवस्था अंकों मे नहीं है, यह तो जितने भी अंक हैं, सब ही स्वतन्त्र है, न तो एक दूसरे के साथ मिलते हैं, और न आधे होते हैं और न निज बल को कम होने देते हैं, और साथ ही एक दूसरे का आदर करते हुए इतने संप संगठन से रहते हैं कि जिनका स्थान दश गुणा बढता जाता है, साथ ही एक अनुस्वार अर्थात् मींडी जो स्वयं

अपने बल पर बिना किसी दूसरे अंक की सहायता के बगैर, निज बल बताने में असमर्थ है परन्तु ऐसी मीडी को भी अपने बीचमें पाई हुई जानकर लोग लोकमें गिनती नही करते हुए भी इसका बल दश गुणी संख्या तक पहुँचा देते हैं, और मींडी द्वारा संख्या बढ़ती जाती है इस तरह इस अंकमें एक के पास एक आता है तो दश गुणा बल बढ जाता है, और साथ ही ऐसा संप है कि जिसके साथ एक है और दो तीन आगे आते जाते हैं तो पिछले अंक का बल कायम रह कर आगे आने वाला अंक और संख्या बढाता जाता है, उदाहरण से समझो कि एक के पास पांच आया तो पन्द्रह हो गए, दोनों की संधि से दस गुणा बढ गया इस तरह की सन्धि तो कायम रहती है और पांच के पास दूसरा पंजा आ गया तो एक सो पचपन हो जाते हैं अर्थात् जिस अङ्क के पास जाकर कोई अङ्क बैठेगा वह दश गुणी संख्या कर देगा, इस तरहका संप-संगठन और अपने पास आए हुए जाति भाई अपने अङ्क को बढाते रहते हैं, इस तरह की संख्या का बढना एकत्र रहने तक ही होता है, जब एक से एक

अलग हो जाते हैं तो फिर उसी मूल रूप पर आ खडे होते हैं और सख्या बल घट जाता है।

इस तरह भिन्न भिन्न अङ्कों की योजना जिसकी गिनती अमुक सख्या तक आ पहुँचे उसमें विशेष सिद्धि मानी गई है, और उस सख्या के अङ्कों को यथाव्यवस्थित कोठे बनाकर लिखना उसी को यत्र कहते हैं, ऐसे यत्रों की साधना से बहुत बडे कार्य भी सिद्ध हो जाते हैं। यत्रों की शक्ति अपार होती है जिस प्रकार अक्षरों की सयुक्तासे मंत्र बनता है और मत्र द्वारा आराधना से देव प्रसन्न होते हैं, ऐसे मत्र सर्प के विष को विच्छु के जहर को उतार देते हैं और मत्र द्वारा कठिन से कठिन कार्य सिद्ध होते हैं, तदनुसार यत्र भी अमुक अंक के मिलान से अमुक देव को प्रसन्न कर लेता है और वह देव प्रसन्न हो जाने बाद उस यत्र के आधीन हो सेवक के कार्य को सुधारता है, जिनकी गति बहुत बडी विशाल होती है, इसी लिए मत्र के साथ यंत्र का सपूर्ण सबन्ध है, इसी लिए श्रीभक्तामरस्तोत्र, श्रीकल्याणमंदिरस्तोत्र, उवसग्गहरस्तोत्र, तिजयपहुत स्तोत्र, घटाकरणस्तोत्र आदि के मन्त्र अलग-अलग

धन हुए हैं और प्रति मन्त्र के साथ यंत्र भी बनाए गए हैं, जो आप्त पुरुषों की कृति है जिसको विधि-विधान सहित लिखकर पास में रखने से या पूजन करने से फल मिलता है इस तरह यंत्रका प्रभाव बहुत बड़ा होता है, और विशेष बल बढ़ता रहता है, समझ सको तो समझो कि इसी लिए हजारों हार्स पावर से चलती हुई मशीन को यंत्र कहते हैं, और जिस प्रकार वर्तमान यंत्र योजना ने निज प्रभाव को सारी दुनियां में फैला दिया है,तदनुसार यह यन्त्र योजना भी पूर्वाचार्यों रचित व संग्रहित होने से अत्यन्त प्रभाव वाली है, जिसका आदर कर जो मनुष्य यथा विधि आराधना करेगा लाभ पावेगा लाभ ही श्रद्धा में कमी न होना चाहिए, जब आप यन्त्र को व यन्त्राधीन देव को आदर की दृष्टि से देखोगे तो वह भी आपके ऊपर वात्सल्य भाव रखेगा।

॥ यन्त्रांक योजना ॥

यंत्रमें जो विविध प्रकार के खाने होते हैं, जिनमें से कई यंत्र तो ऐसे होते हैं कि जिनमें लिखे अङ्कों को

किसी भी तरफ से गिनते हुए अन्त की सख्या एक ही प्रकार की आवेगी, बहुधा इस प्रकार के यत्र आप देखेंगे, इस तरह की योजना से यह समझ में आता है कि यत्राक अपने बलको प्रत्येक दिशामें एकसा रखता है, और किसी दिशा में भी निज प्रभाव को कम नहीं होने देता।

यत्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार के खाने होते हैं, और वह भी प्रमाणित रूप से व अकों से अकित होते हैं, जिस प्रकार प्रत्येक अक निज बल को पिछले अक मे मिला दश गुणा बढा देता है, तदनुसार यह योजना भी यन्त्र शक्ति को बढाने के हेतु से की गई समझना चाहिए।

जिन यत्रों मे विशेष खाने हैं, और उन खानों मे अकित किए हुए अकों को किधर से भी मिलान करने से एक ही योग की गिनती आती हो तो इस तरह के यत्र अन्य हेतु से समझना चाहिए, और ऐसे यन्त्रों का योगाक करने की भी आवश्यकता नहीं होती, ऐसे यंत्र इस तरह के देवों से अधिष्ठित होते हैं कि जिनका प्रभाव

प्रविष्ट होता है, जैसे भक्तामर आदि के यंत्र हैं, इस लिए जिन यंत्रों में यागोक्त एक न मिलता हो उनके प्रभाव में या लाभ प्राप्ति के लिए शंका करने की आवश्यकता नहीं है।

॥ यन्त्र लेखन योजना ॥

जब यंत्र का साधन-या सिद्धि करने के लिए बैठें उससे पहले यंत्र को लिखने की योजना को समझलें बिना समझे या अभ्यास किए बगैर यंत्र लिखोगे तो उसमें भूल हो जाना संभव है। मानलो भूल हो गई और लिखे हुए अङ्क को काट दिया या मिटा दिया और उसकी जगह दूसरा लिखा तो वह यन्त्र कामदाई नहीं होगा, यदि अंक लिखते समय अधिक या एक के बदले दूसरा लिखा गया तो यह भी एक प्रकार की भूल मानी गई है, अतः इसी तरह से लिखा गया हो तो उस कागज या भोज-पत्र जिस पर लिख रहे हो उसको छोड़ दो और दूसरा लेकर लिखने लगो, इस तरह की एक भी भूल न होने पावे इसी लिए पहले लिखने का अभ्यास कर लेना चाहिए।

यन्त्र लिखते समय यन्त्र में देखलो कि सब से छोटा याने कम गिनती वाला अङ्क किस खाने मे है, और जिस खाने में हो उसी खाने से लिखना शुरू किया जाय और वृद्धि पाते अङ्क से लिखते जाओ, जैसे यन्त्र में सबसे छोटा अक पजा है तो पाच का अंक जिस खाने में है उसी खाने से लिखने की शुरुवात करो और बाद में वृद्धि पाते हुए याने छे-सात-आठ जो भी सख्या लिखे हुए से पहली अधिक हो उसे लिखते हुए यन्त्र पूरा लिखलो। ऐसा कभी मत करना कि यन्त्र के खाने अकित किये बाद प्रथम के खाने में जो अक हो उसे लिखकर बाद में पास में जो खाने हैं उनमें लाइन सर लिखते जाओ। यदि इस तरह से यन्त्र लिखा गया है तो वह यन्त्र लाभ नहीं पहुँचा सकेगा, इसी लिये यन्त्र लिखने की कला को बराबर सीख लेना चाहिये, और लिखते समय बराबर सावधानी से लिखना योग्य है।

॥ यन्त्रलेखनगन्ध ॥

यत्र अष्ट गंध से, पचगंध से, और यक्षकर्दम से

लिखे जाते हैं, और कलम के लिए भी अलग विधान है, अनार की, चमेली की और सोने की कलम से लिखना बताया गया सो यन्त्र के बयान में जिस प्रकार की कलम या गंध का नाम आवे वैसी तैयारी कर लेना चाहिए। लिखते समय कलम टूट जाय तो यंत्र से काम नहीं हो सकेगा और लिखते समय गंधादि भी कम न हो जाय जिसका उपयोग पहले ही कर लेना चाहिए।

अष्ट गंध में (१) अगर (२) तगर (३) गोरोचन (४) कस्तूरी (५) चन्दन (६) सिन्दूर (७) लाल चन्दन और (८) केशर इन सबको एक जगह में घोट कर तैयार कर लेना और लिखने की स्याही जैसा रस बना लेना।

अष्ट गंध का दूसरा विधान (१) कपूर (२) कस्तूरी (३) केशर (४) गोरोचन (५) संघरफ (६) चन्दन (७) अगर और (८) गेहूँला इस तरह आठ वस्तु का बनता है।

अष्ट गंध का तीसरा विधान (१) केशर (२)

कस्तूरी (३) कपूर (४) हिंगलु (५) चन्दन (६) लाल चन्दन (७) अगर, (८) तगर लेकर घोट कर तैयार कर लेना।

पच गध का विधान, केशर, कस्तूरी, कपूर, चन्दन, गोरोचन, इन पाच वस्तु का मिश्रण कर रस बना लेना।

यक्ष कर्दम का विधान (१) चन्दन (२) केशर (३) कपूर (४) अगर (५) कस्तूरी (६) गोरोचन (७) हिंगलु (८) रताजणी (९) अम्बर (१०) सोने का वर्क (११) मिरचककोमु, इन सब को लेकर शाही जैसा रस बना लेवें।

ऊपर बताए अनुसार शाही जैसा रस तैयार कर पवित्र कटोरी या अन्य किसी स्वच्छ पात्र में लेना, खयाल रखिये कि जिसमें भोजन किया हो अथवा पानी पीया हो तो वह कटोरी काममें नहीं आ सकेगा, शाही यदि तात्कालीक न बनाई हो और पहले बनाकर सुखा कर रखी हो तो उसे काम मे ले सकते हैं सब तरह के गध या शाही की तैयारी में गुलाब जल काम में लेना चाहिए, और अनार की या चमेली की कलम

ऐसी अँगुल से चाले ग्यारह, तेरह अँगुल लम्बी होना चाहिये और याद रखिये कि ग्यारह अँगुल से कम होना मना है, सोने का निब हो तो वह भी नया होना चाहिये जिससे पहले कभी न लिखा गया हो जिस होल्डर में निब डाला जाय उसमें लोहे का कोई अंश न होना चाहिये इस तरह की तैयारी व्यवस्थित रूप से की जाय।

भोजपत्र स्वच्छ हो, दाग रहित हो, फटा हुआ न हो, ऐसा स्वच्छ देखकर लेना और यन्त्र जितना बड़ा लिखना हो उससे एक अँगुल अधिक लम्बा चौड़ा लेना चाहिये भोजपत्र न मिल सके तो अभाव में आवश्यकता पूरी करने को कागज भी काम में ले सकते हैं।

॥ यन्त्र लेखन विधान ॥

यन्त्र लिखने बैठें तब यदि यन्त्र के साथ विधान लिखा हुआ मिले तो उस पर ध्यान देना चाहिए और खास कर यंत्र लिखते समय मौन रहना उचित है, सुखासन से आसन पर बैठना सामने थोड़ा-थोड़ा

पाटिया या बाजोठ हो तो उस पर रख कर लिखना परन्तु निज के घुटने पर रख कर कभी न लिखना चाहिए, क्योंकि नाभि के नीचे का अंग ऐसे कार्यों में उपयोगी नहीं माना है,

प्रत्येक यत्र के लिखते समय धूप दीप अवश्य रखना चाहिये और यत्र विधान में जिस दिशा की तर्फ मुख करके लिखना बताया हो देख लेवें यदि न लिखा मिले तो सुख सम्पदा प्राप्ति के हेतु पूर्व दिशा की तर्फ और सकट कष्ट आधि व्याधि के मिटाने को उत्तर दिशा की तर्फ मुख करके वैठना चाहिये, तमाम क्रिया करने शरीर शुद्धि कर स्वच्छ कपडे पहिन करके विधान पर पूरा ध्यान रखना उचित है।

लेखन विधि ऊनके बने हुए आसन पर बैठ कर, करना चाहिये और स्थान शुद्धि का भी ध्यान रखना।

॥ यन्त्र चमत्कार ॥

यन्त्र का वहुमान कर उससे लाभ प्राप्त करने की प्रथा प्राचीन काल से चली आती है। वार्षिक पर्व

दीवाली के दिन दुकान के दरवाजे पर या अन्दर जहां देव स्थापना हो वहां पर पन्द्रहिया चोंतीसा, पैंसठिया यंत्र लिखने की प्रथा बहुत जगह देखने में आती है, विशेष में यह भी देखा है कि गर्भवती स्त्री कष्ट पा रही हो और छुटकारा न होता हो तो विधि सहित यंत्र लिखकर उस स्त्री को दिखाने मात्र से ही छुटकारा हो जाता है और किसी स्त्रीको डाकिनी शाकिनी सताती हो तो यंत्र को हाथों पर या गले में बांधने मात्र से या सिर पर रखने या दिखाने मात्र से आराम हो जाता है।

प्राचीन काल में ऐसी प्रथा थी कि, किले या गढ़ की नींव लगाते समय अमुक प्रकार का यन्त्र लिख दीपक के साथ नींव के पाये में रखते थे इस समय भी बहुत से मनुष्य यन्त्र को हाथ के बांधे रखते हैं और जैन समाज में तो पूजा करने के यन्त्र भी होते हैं जिन का नित्य प्रति प्रक्षाल कराया जाता है और चन्दन से पूजा कर पुष्प चढ़ाते हैं, इस तरह से यंत्र का बहुमान प्राचीन काल से होता आया है वा अब तक चल रहा है, साथ ही श्रद्धा भी फलती है, जिस मनुष्य को यंत्र पर भरोसा होता है उसे फलभी मिलता है इसी लिए श्रद्धावान लोग विशेष लाभ उठाते हैं। श्रद्धा रखने से

आत्म विश्वास बढता है, एक निष्ठ रहने की प्रकृति हो जाती है और इतना हो जाने से आत्मबल आत्म गुण भी बढते हैं, परिणाम मजबूत होते हैं और आत्म शुद्धि होती जाती है इस लिए विश्वास रखना चाहिये।

॥ यन्त्र लेखन किससे कराना ॥

जो मनुष्य मन्त्रशास्त्र, यन्त्रशास्त्र के जानकार और अंकगणित जानने वाले ब्रह्मचारी-शीलवान उत्तमपुरुष हों उनसे लिखाना चाहिये, और ऐसे सिद्ध पुरुष का योग न पा सकें तो जिस प्रकार का विधान प्रति यन्त्र के साथ लिखा हो उसी तरह से तैयारी कर यन्त्र लेखन करे और लिखते ही यन्त्रको जमीन पर नहीं रखना और जिसके लिए बनाया हो उसे सूर्य स्वर या चन्द्र स्वर में देना चाहिये, लेने वाला बहुमान पूर्वक ग्रहण करते समय देव के निमित्त फल भेंट करे तो अच्छा है। यन्त्र लेने बाद सोने के, चांदी के या तांबे के मादलिये में यन्त्र को रख देना भी अच्छा है यदि मादलिया न रखना हो तो वैसे ही पास में रख सकते हैं, यन्त्र को ऐसे ढग से रखना उचित है कि वह अपवित्र न होसके, मृत्यु प्रसंग में लोकाचार में जाना पड़े तो वापसी पर धूप खेवने से पवित्रता आ जाती है।

॥ अंकगणित भविष्य फल ॥

अङ्क योगसे भविष्य फल और सुख दुख का ज्ञान जान सकते हैं वर्तमान समय में अङ्कविद्या के विद्वान अल्प संख्या में रह गये हैं, और जिसका खास कारण यही पाया जाता है कि प्राचीन विद्या और संस्कृति का विकास करने के काम में सहायक नहीं मिलते, अंकगणित से सुख-दुख भविष्य और आपत्ति आदि किस प्रकार जान सकते हैं जिसका एक उदाहरण है कि जब सन १९१४ में लड़ाई जारी हुई थी उस समय सात देश के राजा बादशाह या अधिकारी जो देश के सर्वेसर्वा थे उनका संगठन हो गया था और एक सलाह से परचक्र के दुश्मन से सामना करने को जुट गए थे जिसका हानि लाभ सब देशों को न्यूनाधिक परंतु समान अंश में भोगना पड़ा था जिसका भविष्य आंकड़ा गिनती से जानने को प्रथम जर्मनी से लड़ने वाले नौ राजाओं के नाम लिखेंगे और प्रत्येक का जन्म संवत्, राज्याभिषेक वर्ष, राजसत्ता भोगने का वर्षकाल

प्रत्येक की आयुका वर्तमान वर्ष लिख कर सबका योग करेंगे तो सबके योग ३८३४ आते हैं, यह बात आश्चर्य पैदा करती है कि इस योग वाले सबके सबको सुख दुख आपत्ति समान दरजे भोगना पडी थी।

न	नाम	जन्म-सन्	राज्याभिषेक	राज्य-सता	उमर	योग
१	इङ्गलेंड के राजा	१८६५	१९१०	७	५२	३८३४
२	अमेरिकाके प्रमुख	१८५६	१९१२	५	६१	३८३४
३	फ्रास के प्रेसीडेंट	१८६०	१९१३	४	५७	३८३४
४	इटली के राजा	१८६९	१९००	१७	४८	३८३४
५	रशिया के शहेनशाह	१८६८	१८९४	२३	४९	३८३४
६	बेलजियमके राजा	१८७९	१९१२	५	३८	३८३४
७	जापान के शाह	१८७९	१९१२	५	३८	३८३४
८	सरविया के राजा	१८४४	१९०३	१४	७३	३८३४
९	मोंटोनिग्रिके राजा	१८४१	१९१०	७	७६	३८३४

इस युद्धकालके बाद सन ११२९ में दूसरा युद्ध जारी हुवा और सन् १९४४ सेपटेम्बर की सात तारीख को दोबजे वध हुवा इस युद्धमें भाग लेनेवाले मुख्य सत्ताधीशोंका जन्म आदि का सन् देखते एक ही योग

जाता है और समान दरजे आपत्ति आगन का मान कराता है,

नं	नाम	जन्म-सन्	उमर	अधिकार पाया	सत्ता के वर्ष	सब योग
१	बर्लिन	१८७४	७०	१९४०	४	३८८८
२	हिटलर	१८८९	४५	१९३३	११	३८८८
३	रूजवेल्ट	१८८२	६२	१९३३	११	३८८८
४	मुसोलिनी	१८८	६१	१९ ८	२२	३८८८
५	स्टॅलिन	१८७	६५	१९२४	२०	३८८८
६	टोजो	१८८४	६	१९४१	३	३८८८

ऊपर बताए हुए अंकगणित का योग कितना आश्चर्यकारी है इस तरह से एक योग का जो भविष्य कहा गया सुना गया उस पर से अंकगणित विद्या की महत्वता समझ में आ सकती है इन नामों उदाहरणों से कुछ समझ सके तो इसी प्रकार यंत्र में दिए हुए अंक का योग भी विशेष प्रकार की विशिष्टता वाला होता है इसी लिए प्राचीन काल में यंत्र प्रयोग को विशेष मान दिया जाता था, और भाग्यवान मनुष्य वर्तमान समय में भी यंत्र प्रयोग से लाभ उठाते हैं।

अङ्कगणित मे होने वाले वस्तुके भाव की तेजी मन्दी खुलते भाव बद भाव आदि जानने की कला को आकड़ा गिनती कहते हैं, और इस तरह की गिनती जानने वाले-गिनती के आधार पर ही व्यापार किया करते हैं, इस लिए सिद्ध होता है कि अंक गणित भविष्य-फल जानने के लिये एक उत्तम साधन रूप है, अस्तु ।

॥ यन्त्र संग्रह ॥

॥ शकुनका पंदरिया यन्त्र ॥१॥

४	३	८
९	५	१
२	७	६

पंदरिया यन्त्र आपके सामने है, इसमें एक से नौ अङ्क तक की योजना है इस लिये इसको सिद्धचक्रयन्त्र भी कहते हैं, इस यन्त्र पर शकुन लिये जाते हैं ताँबे के पत्रे पर या कागज पर अष्ट गंध से अच्छे समय में यन्त्र लिख लिया जाय और जहां तक हो सके चांदी के पाटिये का बना हुआ पाटला हो उस पर स्थापित करें—चांदी का पाटिया न मिल सके तो जैसा भी मिले उस पर स्थापित कर धूप से मिले हाथों को स्वच्छ कर नवकार मंत्र नौ बार बोलकर तीन चावल या तीन गेहूं के दाने लेकर ऊपर छोड़ देवे जिस अंक पर कण अर्थात् दाने गिरे उसका फल इस तरह समझ लेवे ।

चोके छक्के दीसे नहीं, शकुन विचारी जोवे ॥
तीय अट्ठे साते विषे, पाव सुधारे ॥

एके पन्जे नव निधि पावे ॥

इस तरह फल का विचार कर कार्य की सिद्धि को समझ लेना ।

॥ द्रव्य प्राप्ति पंदरिया यंत्र ॥ २ ॥

४	३	८
९	५	१
२	७	६

इस यंत्र से बहुत से लोग इस लिए परिचित हैं कि दीवाली के दिन दुकान में पूजन विभाग में लिखते हैं, जब कार्य की सिद्धि के लिए लिखना है तो सिंदूर से लिखना चाहिये, पहले छोटे खाने शुद्ध कलम से बनाकर एक अङ्क जो छट्ठे खाने में है वहा से शुरुआत करें सातवें खाने में दो का अक दूसरे में तीन का अक इस तरह चढते अक लिखना चाहिये, और बाद में चन्दन या कुकुम से पूजन कर पुष्प चढाना धूप खेव कर नैवेद्य फल भेंट कर हाथ जोड लेना यही इसका विधान है, यत्र लिखते समय जहा तक हो सके श्वास स्थिर रख मौन रह कर लिखना चाहिए, और हो सके तो नित्य धूप खेव कर नमन कर लेना चाहिये ।

॥ वशीकरण पंदरिया यन्त्र ॥३॥

६	७	२
१	५	६
८	३	४

यह पंदरिया यंत्र भोज पत्र या कागज पर पंच गंध से लिखना चाहिये विशेष कर शुक्ल पक्ष में पूर्णा तिथि के दिन शुभ नक्षत्र वार को घी का दीपक सामने रख धूप खेव कर चमेली की कलम से लिखना और जिस यंत्र को पास रखना चाहिये शीघ्रता से सिद्ध करना है तो जिस काम पर वश् करना है प्रातःकाल में यंत्र को धूप मे खेवे और कार्य का नाम लेवे, यंत्र को नमन कर पास में रखे कार्य सिद्ध होगा ।

॥ उच्चाटण निवारण पंदरिया यन्त्र ॥४॥

८	७	६
६	५	१
४	३	८

यह यंत्र उच्चाटण या उपद्रव को नाश करने में सहायक होता है प्राचीन समय से ऐसी पद्धति चली आती है कि इस यन्त्र को दिवाली के दिन दुकान के दरवाजे पर लिखते हैं और इस यंत्र को लिखने का कारण यही है कि भय का नाश हो और

सुख सम्पदा आवे, लिखते समय धूप दीप रखना और सिंदूर से चमेली की कलम से लिखना चाहिये, दरवाजे के सिरे पर कोई मागलिक स्थापना हो तो उसके दोनों तरफ लिखना स्थापना न हो तो दरवाजे मे जाते दाहिनी तरफ ऊपर के भाग में लिखना चाहिये।

इस यत्र का उपयोग जव किसी मनुष्य को भय उत्पन्न हुवा हो और उसे वास्तविक भय के सिवाय वहम भी हो रहा हो तो उसके निवारण के लिए भोज पत्र पर अष्ट गध से लिख कर पास मे रखने से स्थिरता आवेगी वहम दूर होगा यत्र को दशाग धूप से खेवना चाहिए।

॥ प्रसूति पीडाहर पंदरिया यंत्र ॥५॥

८	३	४
१	५	६
६	७	२

प्रसूति स्त्री को प्रसव के समय पीडा होती है और जल्दी छुटकारा न हो तो कुटुम्ब में चिंता वढ जाती है, जब ऐसा समय आया हो तो इस यत्र को सिंदूर से या चन्दन से अनार की कलम से मिट्टी की कोरी ठीकरी जो मिट्टी के टूटे हुए

बरतन की आग रहित हो उसमें लिखकर लोबान से खेव कर प्रसुति को बताने से प्रसव शीघ्र हो जायगा प्रसुति यंत्र को एक दृष्टि से कुछ देर देखती रहे और इतने पर से प्रसव शीघ्र नहीं होवे तो चन्दन से लिखे हुए यंत्र को स्वच्छ पानी मे उस ठीकरी पर के यंत्र को धोकर वह पानी पिला देवे तो प्रसुति पीड़ा मिट जायगी।

॥ मृत्यु कष्ट हर पंदरिया यंत्र ॥६॥

८	१	६
३	५	७
४	९	२

यह यंत्र उन लोगों के काम का है कि जो जीवन की जोखम का काम करते हैं जल में स्थल पर व्योम में या बारूद यंत्र से आजीविका चलाते हों या ऐसे कठिन काम हों कि जिनके करते समय आपत्ति आने का अनुमान किया जाता हो इस तरह के कार्य करने वाले इस यंत्र को यक्षकर्दम से लिखकर अपने पास रखे तो अच्छा है, इस यंत्र को अनार की कलम से लिखना चाहिये और दीवाली के दिन मध्य रात्रि में लिखकर पास में रखें तो और भी अच्छा है दीवाली के दिन नहीं लिखा जाय तो अच्छा

दिन देख कर विधान के साथ लिख मादलिये में रख पास में रखे।

॥ पिशाच पीडाहर सत्तरिया यंत्र ॥७॥

॥	७	२	७॥
४	४॥	२॥	५
६॥	१	८	१॥
६	३॥	४॥	३

पिशाच-भूत-प्रेत-डाकिनि-शाकिनी द्वारा कष्ट पहुँचता हो तो उसे निवारण करने के लिए ऐसे यत्रको पास में रखना चाहिये. भोजपत्र या कागज पर यक्षकर्दम से अनार या चमेली की कलम से अमावस्या, रविवार और मूल नक्षत्र इन तीन में से एक जिस दिन हो स्वच्छ होकर मौन रह कर इस यत्र को लिखे लोवान और धूप दोनों का धूंवा चलता रहे उत्तर दिशा या दक्षिण दिशा की तर्फ लाल या श्याम रग के आसन पर बैठ कर लिखे और लिखे बाद सात रंग के रेशम का धागा यत्र के लपेट देवे, और मादलिये में रखले या कागज में लपेट अपने पास रखे, विशेष जिस के लिये बनाया हो उसका नाम यत्र के नीचे लिखे जिसमें लिखे कि "शाकिनी" पीडा निवार्णार्थ या "भूत पीडा

निवारणार्थे" जिसकी ओर से पीड़ा होती हो उसका नाम लिखे, किसी मनुष्य को कोई शत्रु या क्रूर प्रकृति वाला मनुष्य सताता हो कष्ट पहुंचाता हो, हैरान, परेशान करता हो तो यंत्र लिखे बाद उसका नाम लिख "अमुक द्वारा उत्पन्न पीड़ा के निवारणार्थे" ऐसा लिखना चाहिए और तैयार करने के बाद पास में रखे तो जो कष्ट हो रहा होगा उससे शांति मिलेगी। दोनों विधान में पत्र कलम से ही लिखना चाहिए।

॥ सिद्धि दाता बीसा यंत्र ॥ ८ ॥

९	४	७
५	७	८
६	९	५

बीसायंत्र बहुत प्रसिद्ध है और यह कई तरह के होते हैं, जैसा कार्य हो वैसा यंत्र बनाया जाय तो लाभ होता है, इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर चमेली की या सोने की कलम से लिखना चाहिए भोजपत्र स्वच्छ लेकर गुरु पुष्य या रविपुष्य योग हो उस दिन या पूर्ण तिथि को लिखे और पूर्व दिशा या उत्तरदिशा की तरफ मुंह करके लिखे दीपक धूप सामने रखे यंत्र तैयार होने बाद

जिसको दिया जाय वह खडा हो दोनों हाथों में ले मस्तक पर चढावे और पास रखे तो ससार के कामों में सिद्धि मिलती रहेगी।

॥ लक्ष्मीदाता विजय बीसा यन्त्र ॥ ६ ॥

इस यंत्र को लिखना हो तब आवे के पाटिये पर गुलाल छाट कर उस पर चमेली की कलम से एक सौ आठ बार यत्र लिखे, एक बार लिख वही गुलाल या दूसरी गुलाल छाटता रहे बारीक कपडे में गुलाल रख पोटली बनाने से छाटने में सुविधा होगी जब एक सौ आठ बार लिखलें तब उसी समय अष्टगन्ध से भोजपत्र पर या कागज पर यत्र को लिख कर पास में रखे तो उत्तम है, व्यापार या क्रय विक्रय का कार्य करते पास में रख कर किया करे और होसके तो नित्य धूप भी देवे।

—:#:—

॥ सर्व कार्य लाभदाता बीसा यंत्र ॥१०॥
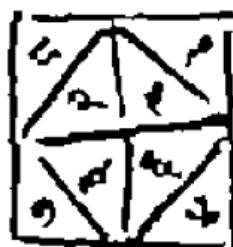
यह यंत्र समस्त कार्य को सिद्ध करता है इस यंत्र को चांदि के पत्रे पर या भोजपत्र पर लिखकर तैयार कर अष्टगंध और चमेली या सोने की कलम से लिखे शुक्लपक्ष शुभवार पूर्णा तिथि या सिद्धियोग अमृतसिद्धि योग हो उस दिन लिख कर रख देवे और धूप दीप रखकर प्रातःकाल से यंत्र की स्थापना कर सामने सफेद आसन पर बैठ नीचे लिखे मंत्र का जाप करे-जाप कमसे कम साढे बारह हजार और अधिक करे तो सवा लाख जाप पूरा कर फिर यंत्र को पास में रख कर कार्य कर।

मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं सर्वकार्य फलदायक कुरु-कुरु स्वाहा

यंत्र तैयार हो जाने बाद जब पास में रखा जाय और अगर पास असुविधा या मृतदेह स्पर्श किया में जाना हो तो वापस आ यंत्र को धूप से खेवने मात्र से शुद्ध हो जायगा।

॥ शाति पुष्टिदाता वीसा यंत्र ॥११॥
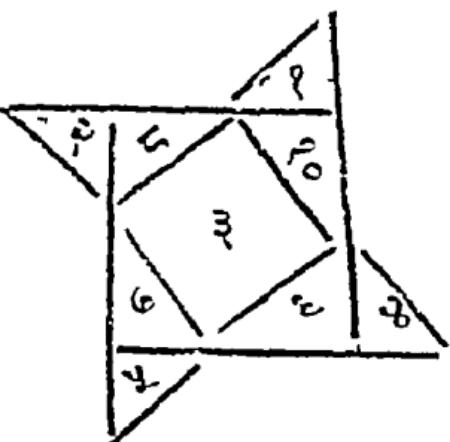
शाति-पुष्टि मिलने के लिए यह यंत्र बहुत उत्तम माना गया है जब इस तरह का मत्र तैयार करना हो तो स्वच्छ कपडे पहिन कर पूर्व दिशा की ओर देखता हुआ बैठ कर धूप दीप रख इष्टदेव का स्मरण कर इस यन्त्र को आवे के पाटिये पर एक सौ आठ बार गुलाल छाट कर लिखे और विधि पूरी होने पर भोज पत्र अथवा कागज पर अष्टगध से लिख यत्र को अपने पास में रखे जिस के लिए यत्र बनाया हो उसका नाम यत्र में लिखे अर्थात् अमुक मनुष्य के श्रेयार्थ ऐसा लिख शुभ समय में हाथ में चावल या सुपारी ले यन्त्र सहित देवे, लेने वाला लेते समय आदर से लेवे और कुछ लेनेवाला भेंट यत्र के नाम से कर धर्मार्थ खर्च करे यह यन्त्र शुभ फल देने वाला है और शाति–पुष्टि प्रदायक है श्रद्धा रख पास मे रखने से लाभ होगा ।

॥ बाल रक्षा बीसा यन्त्र ॥ १२ ॥

२	६	९	७
६	१	६	५
८	१	८	१
४	५	४	७

इस यन्त्र की योजना में एक अक्षर चौबीस दाहिनी ओर का एक खाना बीच में छोड़ कर दो बार आया है जो रक्षा करने में बलवान है इस यन्त्र को शुभ योग में भोजपत्र या कागज पर अष्ट गन्ध से अनार की कलम से लिखे और लिखने के बाद मोड़ कर ऊपर रेशम का धागा लपेटते हुए नौ गांठें लगा देवे बाद में धूप खेव मस्तकिस में रख गले में या कमर पर जहां सुविधा हो बांध देवें, वास्तव में गले में बांधना अच्छा रहता है, इसके प्रभाव से बालक-बालिका के लिए भय चमक डर आदि उपद्रव नहीं होवे और हर प्रकार से रक्षा होती है।

—o:o—

॥ आपत्ति निवारण बीसा यंत्र ॥१३॥

मनुष्य के लिये आपत्ति तो सामने खडी होती है ससार आधि व्याधि उपाधि की खान है, और जब २ कष्ट आते हैं तब मित्र भी वैरी हो जाते हैं ऐसे समय में इस यत्र द्वारा शांति मिलती है आपत्ति को आपत्ति मानता रहे और हताश होता रहे तो अस्थिरता बढती जाती है अत इस तरह के यन्त्र को पचगन्ध से चमेली की कलम से भोजपत्र या कागज पर लिख कर पास में रखे और जिस मनुष्य के लिये यंत्र बनाया हो उसका नाम यत्र में लिखे, "अमुक की आपत्ति निवार्णार्थ" ऐसा लिख कर समेट कर चावल की हार अर्थात् बीज को सुपारी पुष्प सहित हाथ में लेकर दे देवे, लेने वाला आदर से लेकर यत्र को अपने पास में रखे सुपारी आदि कहीं भी रख देवे या जल में प्रवेश कर देवे आपत्ति से बचाव होगा और आपत्ति को नष्ट करने की हिम्मत

पैदा होगी मगज में स्थिरता आवेगी साथ ही अपने इष्टदेव के स्मरण को भी करता रहे, इष्टदेव का आराधन ऐसे समय में बहुत सहायक होता है और दान पुण्य करने से आपत्ति का निवारण होता है इसका ध्यान रखें इष्ट सिद्धि होगी।

॥ गृह क्लेश निवारण बीसा यंत्र ॥१४॥
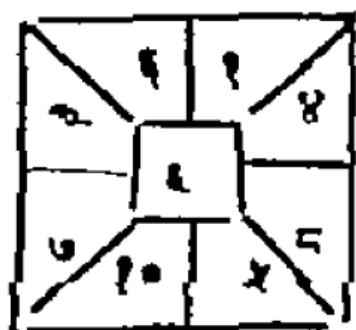
गृह क्लेश तो गृहस्थ के यहाँ अनायास छोटी बड़ी बात में हुआ करता है, और सामान्य क्लेश हुआ होतो जल्दी नष्ट हो जाता है, परन्तु किसी समय ऐसा हो जाता है कि उसे दूर करने में कई तरह की कठिनाइयाँ आजाती है और क्लेश दिन दिन बढ़ता रहता है, ऐसे समय में यह बीसा यंत्र बहुत काम देता है, इस यन्त्र को भोजपत्र या कागज पर पचकर्दम से लिखना चाहिये और लिखने बाद एक यंत्र को तो ऐसी जगह लगा देना कि जिस पर सारे कुटुम्ब की दृष्टि पड़ती रहे, और एक यंत्र घर का

मुखिया पुरुष निजके पास में रखे, और पहला यंत्र जिस जगह लगाया जाय वह मनुष्य के शरीर मान से ऊंची जगह पर लगावे, और नित्य धूप खेव कर उपशम होने की प्रार्थना किया करे तो क्लेश नष्ट हो जायगा, प्रत्येक कार्य में श्रद्धा रखनी चाहिए इष्टदेव के स्मरण को कभी नहीं भूलना जिससे कार्य की सिद्धि होगी।

॥ लक्ष्मी प्राप्ति वीसा यन्त्र ॥ १५ ॥
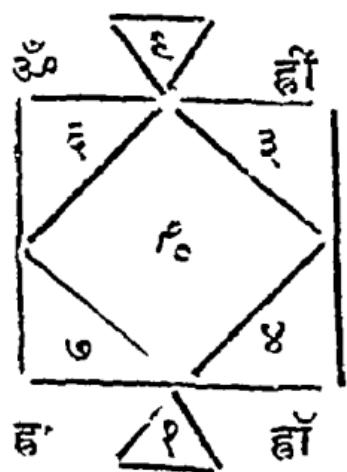
संसार में लक्ष्मी की लालसा अधिक रहा करती है, इसी लिये लक्ष्मी प्राप्ति के लिए अनेक उपाय संसार में गतिमान हो रहे हैं, और ऐसे कार्यों की सफलता के लिये यह यंत्र काम आता है, जिनको इस यंत्र को उपयोग करना हो, तब उत्तम समय देख कर अष्टगन्ध से या पंचगंध से लिख ले, कलम सोने की या अनार की अथवा चमेली की जैसी

भी मिल सके लेकर भोजपत्र या कागज पर लिखे और यन्त्र को अपने पास में रखे, हो सके तो इस तरह का यंत्र तांबे के पतड़े पर तैयार करा प्रतिष्ठित करा निज के मकान में या दुकान पर स्थापन कर नित्य पूजा किया करे शाम सुबह घी का दीपक कर दिया करे तो लाभ मिलेगा इष्टदेव के स्मरण को न भूलें पुन्य सञ्चय करें पुन्य से आशायें फलती हैं और दान देने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

॥ भूत-पिशाच डाकिनी पीड़ाहर बीसा मंत्र ॥१६॥

जब ऐसा वहम हो जाय कि भूत पिशाच-डाकिनी पीड़ा दे रही है, तब मंत्र-यंत्र तंत्र वाले की तलाश की जाती है, और इस तरह के वहम अक्सर स्त्रियों को हो जाया करते हैं, और ऐसे वहम का असर हो जाने से दिन भर सुस्त रहती है, रोती है, बकवास करती है और पाचन शक्ति कम हो जाती है, और भी कई तरह के उपद्रव
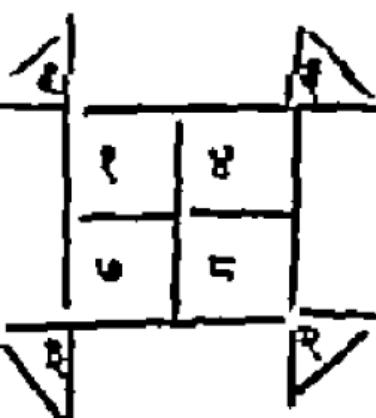
हो जाने से घर के सारे मनुष्य चिंताग्रस्त हो जाते हैं, और यन्त्र-मन्त्र वालों की तलाश करने में बहुतसा धन खर्च करते हैं, ऐसे समय में यह बीसा यत्र काम देता है। यत्र को यक्षकर्दम से अनार की कलम लेकर लिखना चाहिए। लिखते समय उत्तर दिशा की तरफ मुख करके बैठना, और यत्र भोजपत्र पर अथवा कागज पर लिखवा कर दो यत्र तैयार करा लेना जिनमे से एक यत्र को मादलिये में रख कर गले में या हाथ पर बाध देना, दूसरा यत्र नित्यप्रति देखकर डब्बी में रख देना और जिस समय पीडा हो तब दो-चार मिनट तक आखें बध किये बगैर यत्र को एक दृष्टि से देखकर वापस रख देना सो पीडा दूर होगी, कष्ट मिटेगा और धन व्यय से बचत होगी, धर्म नीति को नहीं छोडना।

॥ बाल भयहर इकीसा यंत्र ॥१७॥

बालक को जब पीडा होती है, चमक हो जाती है, तब अधिक भय पुत्र की माता को हुआ करता है, और जिस प्रकार से हो सके पीडा मिटाने के उपाय

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

किये जाते हैं और घरके सब लोग ऐसा अनुमान कर लेते हैं कि किसी की दृष्टि लगने से या भय से अथवा धमक से यह पीड़ा हो गई है,—इस तरह की पीड़ा दूर करने में यह यंत्र सहायक होता है। जब यंत्र तैयार करना हो तब भोज पत्र अथवा कागज पर यक्षकर्दम से अनार की कलम लेकर लिखना चाहिए। जब यंत्र तैयार हो जाय तब समेट कर कच्चे रेशमी धागे से सात अथवा नौ आंटे देकर मादलिये में रख गले में या हाथ पर बांधने से पीड़ा मिट जाती है, व्याधि-चिंता का नाश हो जाता है, बालक आराम पाता है, नित्य इष्ट देव के स्मरण को नहीं भूलना चाहिए।

॥ नजर दृष्टिहर चोवीसा यंत्र ॥१८॥

७	६	११
१२	८	४
५	१०	९

बालक को दृष्टि दोष हो जाता है तब—दूध पीते या कुछ खाते समय अरुचि हो जाने से वमन हो जाती है, पाचन शक्ति कम हो जाने से मुखाकृति रक्त रहित दीखने

लगती है, इस तरह की हालत हो जाने से घर में सबको चिंता हो आती है, इस तरह की परिस्थिति में चोवीसा यन्त्र भोज पत्र अथवा कागज पर अनार की कलम लेकर यक्षकर्दम से लिखना चाहिए, और मादलिये में रख गले पर या हाथ पर बाधना, और जिस मनुष्य का या स्त्री का दृष्टि दोष हुवा हो उसका नाम देकर दृष्टि दोष निवार्णार्थ लिखना चाहिए, यदि नाम स्मरण न हो तो केवल इतना ही लिखना कि "दृष्टि दोष निवार्णार्थ" यन्त्र तैयार हो जाय तब समेट कर कच्चे रेशमी धागे से आटे देकर यन्त्र को पास में रखे या गले पर हाथ पर बाधें तो दोष दूर हो जाता है ।

॥ प्रसूति पीडाहर उन्तीसा यन्त्र ॥ १६ ॥

१५	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

यह यन्त्र उन्तीसा और तीसा कहलाता है, ऊपर के तीन कोठे और बायी तरफ के तीन कोठों में तो उन्तीस का योग आता है, और मध्य भाग के तीन कोठे और

नीचे के तीन कोठे और ऊपर से नीचे तक मध्य विभाग व दाहिनी ओर के तीन कोठों में तीस का योग आता है। गर्भ प्रसव समय में यदि पीड़ा हो रही हो तब इस यन्त्र को कुम्हार के अवाड़े की कोरी ठीकरी पर अष्ट गन्ध से लिख कर बताने से प्रसव सुख से हो जायगा। बताये बाद भी पीड़ा होती रहे तो यन्त्र को पीतल या कांसे के पतड़े पर या थाली में अष्ट गंध से अनार की कलम द्वारा लिख कर धूप देकर धो कर पिलाने से पीड़ा मिटेगी और प्रसव शीघ्र ही सुख पूर्वक हो जायगा।

॥ गर्भ रक्षा बीसा यंत्र ॥ १० ॥

१६	२	१२
६	१०	४
८	१८	४

इस यंत्र को किसी भी तरफ से गिनने से तीस का योग आता है गर्भ की रक्षा के निमित्त यह यंत्र काम आता है, जब प्रसव समय निकट न हो और पेट में दर्द या और तरह की पीड़ा होती हो तो इस यंत्र को अष्टगंध से लिखवा कर पास में रखने से पीड़ा मिटेगी, जिससे प्रसव नहीं होगा और शरीर स्वस्थ रहेगा।

॥ गर्भ पुष्टिदाता बत्तीसा यंत्र ॥२१॥

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

यह बत्तीसा यत्र है इसको चाहे किसी ओर से गिन लें बत्तीस का योग आवेगा, चार कोठे के अक गिनने के बाद उपर के दो कोठे के उपरनीचे के चार कोठे के मध्य में या तिरछे सीधे किसी भी ओर से गिनते हैं तो बराबर योग बत्तीस का आता है। यह यत्र गर्भ रक्षा के लिए उत्तम माना गया है। जब महिने दो महिने तक गर्भ स्थिर रह कर गिर जाता हो अथवा दो-चार महिने बाद ऋतु स्राव हो जाता हो तो इस यत्र को अष्टगध से तैयार करके पास में रख लेने से या कमर पर बाधने से इस तरह के दोप मिट जाते हैं, गर्भ की रक्षा होती है, और पूर्ण काल में प्रसव होता है, विशेप कर गर्भ स्थित रहने के पश्चात बाल बुद्धि से जो स्त्री ब्रह्मचर्य नहीं पालती हो अथवा गरम पदार्थ खाती पीती हो उसी का गर्भस्राव होना सभव है, और दो-चार बार इस तरह

हो जाने से प्रकृति ही ऐसी बन जाती है, इसलिए ऐसे अमङ्गल करने वाले कार्य को नहीं करना चाहिए, और यन्त्र पर विश्वास रख कर शुद्धता से रखेंगे तो लाभ होगा।

॥ भय हर एवं व्यवसाय वर्धक चोतीसा यंत्र ॥२२॥

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६

इस चोतीसे यन्त्र में भी यही विशेषता है कि चाहे किसी ओर के चार कोठे के अंक को गिनते हैं तो चोतीस का योग आता है, इस यंत्र को जिस जगह व्यवसाय की रोकड़ रहती हो, या धन सम्पत्ति रखने का स्थान हो, या तिजोरी के अन्दर दीपावली के दिन शुभ समय में लिख कर ऊपर पुष्प चढ़ा कर धूप पूजा कर दीपक से आरती उतार कर नमस्कार करना चाहिए। बाद में हो सके तो नित्य धूप पूजा करते रहना यदि नित्य नहीं हो सके तो आपत्ति भी नहीं है। इस यंत्र को अष्टगंध से लिखवा कर पास में रखा जाय तो उत्तम है, तांबे के पत्रे पर तैयार करा

प्रतिष्ठित कराके तीजोरी में रखना भी अच्छा है जैसा जिसको अच्छा मालूम हो करना चाहिए।

॥ मंत्राक्षर सहित चोतीसा यंत्र ॥ २३ ॥

ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	ध	न
कुरु	६	१६	८	१	दा
कुरु	६	३	१३	१२	य
द्धि	१५	१०	२	७	म
सि	४	५	११	१४	म
य	ज	द्धि	वृ	द्धि	ऋ

यह चोतीसा यन्त्र बहुत चमत्कारी है, धन की इच्छा करने वाले और ऋद्धि सिद्धि जय विजय के इच्छुक लोगों की मनो कामना सिद्ध करने वाला यह यंत्र है, इस यत्र को तावे के पतडे पर तैयार कर प्रतिष्ठित करा लेवे और हो सके तो मन्त्र का एक लाख जाप यत्र के सामने धूप दीप रख कर कर लेवे, यदि इतना जाप नहीं हो सके तो साडे बारह हजार जाप तो अवश्य कर लेना चाहिए। जाप करते मत्र बोला जाय उसमें एक गुरुगम है—वह यह है कि

मंत्र के अन्त में "स्वाहा" शब्द से जाप करता जाय अर्थात् कुछ कुछ स्वाहा करना चाहिए, जिससे मन्त्र शक्ति बढ़गी और मन्त्र—यन्त्र नव पल्लवित जैसा होकर लाभ पहुंचायगा।

जाप करते समय एक यन्त्र भोज पत्र पर तैयार कर जाप करते समय तांबे के पतड़ वाले यन्त्र के पास ही रखे, जब जाप सम्पूर्ण हो जाय तब भोज पत्र वाले को नित्य अपने पास में रखे और तांबे के यंत्र को दुकान में या मकान में स्थापित कर नित्य धूप पूजा किया करे, इतना कर लेने बाद हो सके तो मंत्र की एक माला नित्य फेर लेवे, और नहीं हो सके तो कमसे कम इकीस जाप तो अवश्य करना चाहिए, श्रद्धा रख कर इष्टदेव का स्मरण करता रहे नीति से चले और दान—पुन्य करता रहे तो लाभ मिलेगा।

॥ प्रभाव प्रशंसा वर्धक चोतीसा यंत्र ॥२४॥

चोतीसा यंत्र बहुत प्रसिद्ध है, और व्यापारी वर्ग तो इस यन्त्र का बहुमान विशेष प्रकार से करते हैं मेद् पाट मरुभूमि और मालव प्रांत में तो व्यापारी लोग अपनी दुकान पर दीवाली के दिन लिखते हैं, प्राचीन

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	१	१४

काल से ऐसी प्रथा चलती आ रही है कि शुभ समय में सिंदूर से गणपति के पास लिखते हैं, दरवाजे पर मकान की दीवार पर लिखना हो तो हडमची से लिखना चाहिए, इस यन्त्र को लिखे बाद धूप पूजा कर नमस्कार करने से व्यापार चलता रहता है, और व्यापारियों में इज्जत बढती है, प्रशंसा होती है, और ऐसे यन्त्र को भोजपत्र पर लिख कर पासमें रखने से व्यापारी वर्ग में आगेवान की गिनती में आ जाता है, हर एक कार्य में लोग सलाह पूछने आयेंगे, परन्तु साथ ही कुछ योग्यता बुद्धिमानी धैर्यता और निष्पक्षता भी होना चाहिए यदि ऐसे संस्कार न हों और मिलनसार भी न हों तो यन्त्र से साधारण फल मिलेगा, और परोपकारी स्वभाव होगा तो विशेष फल मिलेगा।

॥ धन प्राप्ति छत्तीसा यन्त्र ॥ २५ ॥

इस छत्तीसे यन्त्र को दीवाली के दिन रात्रि के समय

१०	१५	२	७
६	३	१४	१३
१५	११	८	१
४	५	१२	१४

शुभ समय में लिखना चाहिए, दुकान के दरवाजे पर या मंगल स्थापना के दाहिनी ओर अथवा दुकान के अन्दर सामने की दीवार पर सिन्दूर से लिखे तो व्यापार बढ़ता है, व्यापार करते किसी प्रकार का भय-संकट आता हो तो मिट जायगा प्रभाव पड़ेगा, और इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर पासमें रखना भी शुभ सूचक है।

॥ सम्पत्ति प्रदान चालीसा यंत्र ॥२६॥

१२	११	२	७
९	३	१६	१५
१८	१३	८	१
४	५	१४	१७

चालीसा यंत्र दो प्रकार का है, दोनों उत्तम हैं जो सामने हैं, इस यंत्र को किसी भी महिने की सुदी पक्ष की एकादशी के दिन अथवा पूर्णिमा के दिन पंचगन्ध से लिखना चाहिए, पंचगन्ध (१)केसर (२)कस्तूरी (३)कपूर

(४) चन्दन, (५) गोरोचन, इन पाचों को मिश्रित कर उत्तम गन्ध बनाकर स्वच्छ भोजपत्र पर लिखना चाहिए, यह यन्त्र पास में हो तो चोर भय मिटता है, और नदी के किनारे या तालाब की पाल पर आसन बिछा कर बैठे, शुभ समय में यंत्र लिखे-लिखते समय दृष्टि जल पर भी पडती रहे, और लिखते समय धूप दीप अखड रखे तो मनेच्छा पूर्ण होती है, परन्तु इतना स्मरण रखना चाहिए, कि ब्रह्मचर्य पालन में सत्यता का व्यवहार करने में और शुद्ध सम्यक् वृत्ति से रहने में किसी प्रकार से कमी नहीं होना चाहिए, आचरण शुद्ध रखने से क्रिया व साधन फल देते हैं।

१२	९	१	१८
६	१३	१७	४
१९	२	८	११
३	१६	१४	७

।। ज्वर पीडाहर साठियायत्र ।।२७।।

यह साठिया यन्त्र ज्वर-ताप-एकान्तरा-तिजारी आदि के मिटाने में काम आता है। इस तरह के डोरे धागे व यंत्र बनवाने की प्रथा छोटे गांवों में विशेष होती है,

२२	२९	२	७
६	३	२६	२५
२८	२३	८	१
४	५	२४	२७

और जो लोग जिसमें श्रद्धा रखते हैं, उनको मन्त्र, यंत्र, तंत्र फलते भी हैं, इस तरह के कार्यों में इस यंत्र को अष्ट गन्ध से तैयार करके पास में रखने से पीड़ा दूर होती है यावि मिलती है, भोजपत्र अथवा कागज पर लिखकर पीड़ित आत्मा के गले पर या हाथ पर बांधने से अथवा पास में रखने से लाभ होता है। इस यंत्र को कांसी के स्वच्छ पात्र में अष्टगन्ध से लिखकर पी सके उतने पानी से धोकर पानी पिलाने से भी ज्वरादि पीड़ा नष्ट हो जाती है।

॥ चौबीस जिन पेंसठिया यंत्र ॥२८॥

॥ अथ पंचषष्टियन्त्रगर्भितं चतुर्विंशति जिन स्तोत्रम् ॥

वन्दे धर्मजिनं सदा सुखकरं, चन्द्रप्रभं नाभिजं।
श्रीमद्वीरजिनेश्वरं जयकरं कुन्थुं च शांतिं जिनम् ॥
मुक्तिं श्रीपद्मप्रभमनन्तमुनिपं वन्दे सुपार्श्वं विभुं।

श्रीमन्मेघनृपात्मज च सुखद पार्श्वं मनोऽभीष्टक्षम् ॥१॥
श्रीनेमीश्वर सुव्रतो च विमल, पद्मप्रभसावर।
सेवे सम्भवशङ्कर नमिजिन मल्लि जयानदनम् ॥ वदे
श्रीजिन शीतल च सुविध सेवेऽजित मुक्तिद, श्रीसद्व्रत
पञ्चविंशतितम साक्षादर वैष्णवम् ॥२॥ स्तोत्र सर्व-
जिनेश्वरैरभिगत मन्त्रेषु मत्र वरं। एतत् सङ्गतयन्त्र एव
विजयो द्रव्यैर्लिखित्वा शुभैः ॥ पार्श्वे सन्ध्रियमाण
एव सुखदो माङ्गल्यमालाप्रदो । वामागे वनिता
नरास्तदितरे कुर्वन्ति ये भावत ॥३॥ प्रस्थाने स्थिति
युद्ध वाद करणे राजादिसन्दर्शने। वश्यार्थे सुत हेतवे
धनकृते रक्षन्तु पार्श्वे सदा ॥ मार्गे सविपमे दवाग्निज्व-
लिते, चिन्तादिनिर्नाशने, यन्त्रोऽय मुनिनेत्र सिंहकविना
सद्ग्रन्थित सौख्यद ॥४॥ इति

॥ पञ्च षष्टि यंत्र स्थापना ॥

ऊपर बताया हुवा स्तोत्र बोलते जाइए और जिन तीर्थंकर भगवान के नाम का अक आवे उतनी ही अक सख्या लिखने से पैसठिया यन्त्र तैयार हो जाता है, इस तरह के यन्त्र को तावे के पतडे पर तैयार करा

१५	८	१	२४	१७
१६	१४	७	५	२३
२२	२०	१३	६	४
३	२१	१९	१२	१०
९	२	२५	१८	११

शुद्ध कराने बाद पट में स्थापित कर ऊपर बताया हुआ स्तोत्र नित्य-स्तुति रूप से बोल कर नमन करना चाहिए। इस तरह के यंत्र को भोजपत्र पर लिखवा कर पास में रखने से परदेश जाते समय अथवा परदेश में रहते समय में लाभ होता रहेगा किसी के साथ वाद विवाद करने से जय प्राप्त होगी, राजा के पास अथवा और किसी के पास जाने से आदर होगा, नि:सन्तान को पुत्र प्राप्ति होगी, निर्धन को धन का समागम होगा, मार्ग में किसी प्रकार का भय नहीं होगा, चोरों के उपद्रव से बचाव होगा, अग्नि प्रकोप से पीड़ा न होगी, और अकस्मात में रक्षा होगी चिंता नष्ट होगी प्रत्येक काम में विजय प्राप्त होगी, इस लिए जो अपना भविष्य उज्ज्वल बनाना चाहते हों उन पुरुषों को इस यन्त्र का आदर पूर्वक आराधन करना चाहिए।

॥ दूसरा चोवीस जिन पेंसठिया यंत्र ॥२६॥

॥ पञ्च पष्टियंत्र गर्भितं श्रीचतुर्विंशति जिनस्तोत्रम् ॥

आदौ नेमि जिन नौमि, सम्भव सुविधं तथा ॥ धर्मनाथं महादेव, शांतिशांतिकर सदा ॥१॥ अनतं सुव्रत भक्त्या, नमिनाथ जिनोत्तमम् ॥ अजितं जितकन्दर्प, चन्द्र चन्द्रसमप्रभम् ॥२॥ आदिनाथ तथा देव, सुपार्श्व विमलं जिनम् ॥ मल्लिनाथ गुणोपेत, धनुषा पञ्च विंशतिम् ॥३॥ अरनाथ महावीर, सुमति च जगद्गुरुम् ॥ श्रीपद्मप्रभनामान, वासु पूज्यं सुरैर्नतम ॥४॥ शीतल शीतल लोके, श्रेयास श्रेयसे सदा ॥ कुन्थुनाथ च वामेय, श्रीअभिनन्दन जिनम् ॥५॥ जिनाना नामभिर्बद्धः, पच षष्टि समुद्भवा यन्त्रोऽय राजते यत्र, तत्र सौख्यम् निरन्तरम् । ६ ॥ यस्मिन गृहे महाभक्त्या यन्त्रोऽय पूज्यते बुधैः ॥ भूतप्रेत पिशाचादि, भय तत्र न विद्यते ॥७॥ सकल गुणनिधान, यत्रमेन विशुद्धम्। हृदयकमल कोषे, धीमता ध्येय रूपम् ॥ जय तिलक गुरु श्रीसूरिराजस्य शिष्यो, वदति सुखनिदान मोक्षलक्ष्मी निवासम् ॥८॥ इति

—:※—

॥ दूसरे पैंसठिये यंत्र की स्थापना ॥२६॥

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

इस पैंसठिये यंत्र का जो स्तोत्र पाठ श्लोक का बताया है उसका पाठ करते जिन तीर्थंकर का नाम आवे उनकी संख्या का अंक लिखने से पैंसठिया यंत्र तैयार हो जाता है, इस यंत्र का महात्म्य भी बहुत है, यंत्र को प्रथम यंत्रके विधानानुसार ही तैयार करना चाहिए, जिस घरमें ऐसे यंत्र की स्थापना हुआ हुआ करती है, उस घरमें आनन्द मंगल रहा करता है, जो मनुष्य इस यंत्र की आराधना करते हैं उनको प्रत्येक प्रकार के सुख मिलते हैं और जिस मकान में स्थापना की हो वहां पर भूत प्रेत पिशाच का भय नहीं होता— हुआ हो तो नष्ट हो जाता है, इस यंत्र का जितना आदर करेंगे उतना ही अधिक सुख पा सकेंगे इस यंत्र का जिस के पास रखना हो तो मोम पत्र पर तैयार कराके रखना

चाहिए। ऐसे यन्त्र शुद्ध अष्ट गंध से लिखाने से लाभ देते हैं।

लक्ष्मी प्रदान अडसठिया यंत्र ॥३०॥

२	२८	८	३०
१६	२२	१०	२०
२६	४	३२	६
२४	१४	१८	१२

यह अडसठिया यन्त्र बहुत प्रसिद्ध है, कई लोग दीवाली के दिन शुभ समय दुकान के मङ्गल स्थान पर लिखते हैं, इस यन्त्र में यह खूबी है कि किसी भी ओर से चार कोठे के अङ्क गिनने से अडसठ का योग आता है, ऊँचे नीचे आडे टेढे किसी तरह से चार कोठे का योग देखलो बराबर अडसठ का योग आ जायगा, इस यन्त्र को लक्ष्मी प्राप्ति के हेतु चमेली की कलम लेकर अष्टगन्ध से लिखना चाहिए, और समेट कर रेशम लपेट कर निज के पास रखना और व्यापार करते समय तो यन्त्र को पास में रखकर ही करना चाहिए, व्यापार सत्यनिष्ठा व इमानदारी और पुन्यायी से फलते हैं, इष्टदेव के स्मरण ध्यान को न भूलना चाहिए।

॥ नित्य लाभदाता बहत्तरिया यन्त्र ॥२१॥

२५	२०	२७
२६	२४	२२
२१	२८	२३

बहत्तरिया यंत्र के लिए कई मनुष्य खोज करते रहते हैं, मन्त्र का मिल जाना तो सहज बात है, परन्तु विधान का मिलना कठिन बात है। इस यन्त्र को सिद्ध करते समय जहां तक हो सके सिद्ध पुरुष की सानिध्यता में करना चाहिए, और सिद्धपुरुष का योग नहीं मिल सके तो किसी यन्त्र के जानकार की सानिध्यता में करना चाहिए, शुभ दिन देख कर शरीर व वस्त्र की शुद्धता का उपयोग कर अधिष्ठायक देव को सान्निध्य समझ कर प्रातः काल में ढाई घड़ी दिन चढ़े पहले अष्टगन्ध से कागज पर बहत्तर यन्त्र लिखना चाहिए, कलम जैसी अनुकूल आवे चमेली की या सोम के लिंक से लिखे जब यन्त्र लिखने बैठे तब पूर्वदिशा की ओर मुख रखना चाहिए, आसन सफेद ऊना उत्तम बताया है, लिखते समय मौन रह कर यंत्र लिखने के विधान को पूरा कर लेवे। जब यन्त्र लेखन पूरा हो जाय तब यंत्र को एक स्वच्छ

पट्टे पर स्थापन कर अगरवत्ती लगा देवे दीपक स्थापन करे, और ढाई घडी दिन बाकी रहे तब अर्थात् सूर्यास्त से ढाई घडी पहले लिखे हुए यन्त्रों को ऊधे रख कर पानी से धोकर कागज भी जलाशय में डाल देवे, यह सब क्रिया समय पर ही करने का पूरा ध्यान रखे। एक विधान ऐसा भी है कि बहत्तर यन्त्र अलग अलग कागज पर लिखना चाहिए, और कोई एक कागज पर लिखना बताते हैं, जैसा जिसको ठीक मालूम हो सुविधा के अनुसार लिखे, इस प्रकार से बहत्तर दिन तक ऐसी क्रिया करना चाहिए, और बहत्तर दिन तक ब्रह्मचर्य पालना सत्यनिष्ठा से रहना और कुछ तपस्या भी करे जिससे क्रिया फलवती होगी । इस प्रकार से बहत्तर दिन पूरे हो जाय और तिहत्तरवें दिन प्रातः काल ही बहत्तर यन्त्र लिख कर एक डब्बी में रख देवे यन्त्र की पूजा कर धूप दीप रखना कुछ भेंट भी रखना और दिन रात अखंड जोत रख कर प्रात काल में डब्बी लेकर दुकान में गल्ले में तिजोरी में या ताक में रख कर नित्य पूजा कर नमस्कार कर लिया करे इस तरह करते रहने से धन की आय और इज्जत मान सम्मान की वृद्धि होगी, सुख

सौभाग्य बढ़ता रहेगा इष्टदेव के स्मरण को व सत्य निष्ठ धर्म नीति को नहीं छोड़ना चाहिये।

॥ सर्प भयहर अस्सीया यंत्र ॥२२॥

३६	३५	२	७
६	३	३९	३२
३८	३३	८	१
४	५	३४	३७

इस यंत्र में एक से लेकर आठ तक और बत्तीस से लेकर उनचालीस तक के अंकों में पूरा किया है इस यन्त्र के बनाने में यह खूबी है कि ऊपर नीचे आड़े टेढ़े चाहे किसी ओर से चार कोठे के अंक गिनने से योग बराबर अस्सी का आता है, इस यन्त्र को विशेष करके सर्प के उपद्रव में काम में लेते हैं जब सर्प का भय उत्पन्न हुआ हो या मकान में बार-बार निकलता हो, अथवा घर नहीं छोड़ता हो तो अस्सीया यंत्र सिन्दूर से मकान की दीवार पर लिखे, और जहाँ तक हो ऐसी जगह लिखना चाहिए कि जहाँ सर्प की दृष्टि यन्त्र पर गिर जाय, अथवा कांसी की थाली में लिखा हुआ तैयार रखे सो जब सर्प निकले उस

उसे थाली बता देवे सो सर्प भय मिट जायगा, और उपद्रव नहीं करेगा, विधान तो बताता है कि सर्प उस मकान को छोड़ कर ही चला जायगा किंतु समय का फेर हो और इतना फल नहीं दे तो भी उपद्रव–भय तो नहीं रहेगा, और ऐसे समय घर में सर्प हरणी नाम की औषधि जो काश्मीर जिलेमें बहुतायत से मिलती है-मगवा कर घर में रखने से सर्प तत्काल भाग निकलेगा लेकिन सर्प को मारने की बुद्धि नहीं रखना चाहिए । सर्प को सताने से क्रोध कर काटता है, वह समझता है मुझे मारते हैं और सताया न जाय तो वह अपने आप चला जाता है।

॥ भूत–प्रेत भय हर पिच्यासिया यंत्र ॥ ३३ ॥

३४	४२	२	७
६	३	३६	३७
४१	३५	८	१
४	५	३६	४०

अकसर जब मकान में कोई नहीं रहता हो, और बहुत लम्बे समय तक बेकार सा पड़ा हो तो ऐसे मकान में भूत प्रेत अपना स्थान बना लेते हैं, और भूत प्रेत

नहीं भी बसते हों और मकान में रहने वालों उसके बाद कुछ अनिष्ट हो जाय—और कुछ दिन बाद फिर हो जाय तो उस मकान के लिए भ्रम सा हो जाता है, और मकान को खाली कर देते हैं। लोक भ्रमी फैल जाती है, और ऐसे मकान में कोई बिना किराये भी रहने को तैयार नहीं होता। ऐसी अवस्था में इस यंत्र को अष्टगंध से मकान की दीवार पर अंदर के भाग में लिखे और आवश्यकता हो तो प्रति मकान में लिखना भी बुरा नहीं है, यंत्र लिखने के बाद हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे कि हे देव ! स्वस्थानं गच्छ इस तरह करने से उपद्रव शान्त हो जायगा और सुख पूर्वक मकान में रह सकेंगे। देव ! धूप दीप से प्रसन्न होते हैं, और प्रार्थना स्वीकार करते हैं, इस लिए इक्कीस दिन तक सायंकाल को एक घी का दीपक कर धूप कर देना चाहिए।

॥ सुख शांतिदाता इक्कासठ का यंत्र ॥२४॥

कभी कभी ऐसा भ्रम हो जाता है कि इस मकान में आय बाद पर घर से बिमारी नहीं निकलती या मन से नहीं रह सकते—कोई न कोई

३७	४५	२	७
६	३	४२	४०
४४	३८	८	१
४	५	३९	४३

ही जाती है, इस तरह के कारण से उस मकानको छोडने की भावना हो जाती है। ऐसा प्रसग आजाय तो इस यत्र को यक्षकर्दम से मकान के अन्दर व दरवाजे के बाहरी भागपर यक्षकर्दमसे लिखना चाहिए, और सायं काल को धूप खेव कर प्रार्थना करना चाहिए, कि "यत्राधिष्टायक देव सुखशांति कुरु कुरु स्वाहा:" इस तरह से इकीस दिन तक करने से सुख शाति रहेगी, और व्हेम मिट जायगा।

॥ गृह क्लेशहर निन्याणवे का यंत्र ॥३५॥

३६	२९	३४
३१	३३	३५
३२	३७	३०

गृहस्थी के ग्रह ससार व्यवसाय के लिए अथवा विशेष कुटुम्ब के कारण या यों कह दीजिये कि स्त्रियों के स्वभाव के कारण जरासी बात पर मन मुटाव हो जाता है, और उसे न सभाला जाय तो घर में क्लेश बढ जाता है, जिस

घर में इस तरह के क्लेश होवे हैं उसकी आजीविका भी कम हो जाती है, और व्यवहार में शोभा भी कम हो जाती है। बाहर के दुश्मन से मनुष्य सचेत रह सकता है, किन्तु घरका दुश्मन खड़ा हो तो आपत्ति रूप हो जाता है, धन, वैभव, मकान, मिलकियत बही, दूसरे, बाप, भतीज, सिद्धुत जिसके हम भाई हो दाम देता है, और ऐसी अवस्था हो जाने से घर की आबरु कम हो जाती है, इस तरह की परिस्थिति हो तब इस यन्त्र को अष्ट गंध से मकान के अंदर और खास कर पछिवारे पर, और चुल्हे के पास वाली दीवार पर लिखे और अगरबत्ती या धूप सायंकाल को कर दिया करे, इस तरह से इक्कीस दिन तक करे और बाद में आपस में फैसला करने बैठें तो कार्य निपट जायगा, साथ ही स्मरण रखना चाहिए कि न्याय नीति और कर्त्तव्य पूर्वक कार्य करोगे तो सफलता मिलेगी, घर की बात को बाहर नहीं फैलाना चाहिए, इसी में शोभा है और इज्जत की रक्षा है। जो लोग स्त्रियों के कहने में आकर भ्रातप्रेम-कुटुम्ब स्नेह और कर्त्तव्य को भूल जाते हैं, उनका विश्वास

बिगडा समझना प्रत्येक कार्य में इष्टदेव के स्मरण को न भूलना चाहिए।

॥ पुत्र प्राप्ति गर्भरक्षा यंत्र ॥३६॥

४२	४९	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४७

यह सौ का यन्त्र है और इस को आशा पूर्ण यन्त्र भी कहते हैं, जिनके सन्तान नहीं होती हो या गर्भ स्थिति के बाद पूर्णकाल में प्रसव न होकर पहले ही गिरजाता हो तो यह यन्त्र काम देता है। इस यन्त्र को पटगन्ध से लिखना चाहिए, षट गन्ध बनाने में (१) केसर (२) कपूर (३) गोरोचन (४) सिंदूर (५) हींग और (६) खैरसार, इन सबको बराबर लेना परन्तु केसर विशेष डालना जिससे लिखने जैसा गन्धरस तैयार हो जायगा, इतना कार्य शुद्धता पूर्वक करके भोजपत्र पर दीवाली के दिन मध्यरात्रि में तैयार कर स्त्री के गले पर या हाथ पर जहां ठीक मालूम हो बांधदेवें पुत्र के इच्छुक हों तो पति पत्नि दोनों को बांधना—वैसे कर्म तो प्रधान हैं, जैसे कर्म उपार्जन किए होंगे वसा ही फल मिलेगा—परन्तु उद्यम

उपाय भी आप्त पुरुषों के बताये हुए हैं, करने में हानि तो है नहीं, अपने इष्ट देव को स्मरण करते रहना पुण्य प्राप्त करना धर्म उपार्जन करना सो क्रिया फल देगी स्त्री गर्भधारण करेगी, पूर्णकाल में प्रसव होगा अपूर्ण समय में गर्भपात नहीं होगा ऐसा इस यन्त्र का प्रभाव है, श्रद्धा-विश्वास रखने से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं दान, पुण्य धर्म साधन नीति व्यवहार से आशा फलती है।

॥ ताप ज्वर पीड़ा हर एकसो पांचिया यंत्र ॥२७॥

५६	७	४२
२१	३५	४९
२८	६३	१४

यह एक सो पांचिया यंत्र ताप, एकान्तर तिजारी, को रोकने में काम देता है, भोजपत्र या कागज पर लिख कर धागे-डोरे से हाथ पर बांधने से ताप-ज्वरादि मिट जाते हैं यंत्र तैयार हो जाय तब धूप से खेव कर इक्कीस बार ऊपर फेर कर पीड़ा वाले के बांधना जब ज्वर पीड़ा मिट जाय तब यंत्र को कुवे के पानी में डाल देना विश्वास रखना और इष्ट देव का स्मरण करते रहना।

॥ सिद्धिदायक एकसो आठिया यन्त्र ॥२८॥

४६	५३	२	७
६	३	५०	४९
५२	४७	८	१
४	५	४८	५१

यह सोलह खाने का एक सो आठिया यन्त्र है, खाने चाहे किसी तरफ के घुमाकर अंक गिनने से योगांक एकसो आठ आता है, यंत्र में विशेष कर यही खूबी जानने योग्य होती है, इस यंत्र को अष्ट गंध से भोज पत्र या कागज पर लिखना चाहिए कलम चमेली की लेना–सोने का नीव हो तो और भी अच्छ है, यंत्र तैयार कर बाजोट पर रख धूप दीप रख पुष्प चढा कर वास क्षेप से पूजा कर सामने फल नैवेद्य चढ कर नमस्कार कर यंत्र को समेट कर पास में रखे, यः जिस कार्य के लिए बनाया हो उसकी संकल्प यन्त्र क पूजा करने के बाद बयान कर नमस्कार कर लेवे औ जहां तक कार्य सिद्ध न हो वहा तक प्रात:काल ं नित्यप्रति धूप से या अगर बत्ती से खेव लिया क इष्ट देव का स्मरण कभी नहीं भूलें कार्य सि होगा।

॥मुसग्रे कष्ट निवारण एकसोछत्तीसा यन्त्र॥१६॥

४	५६	१६	६०
१२	४४	४०	४०
४१	८	४४	१६
६८	२८	२६	२४

यह सोलह कोठे का एक सो छत्तीसा यंत्र है, इसके चार कोठे के अंक किसी भी तरफ से गिनने से एक सो छत्तीस का योगांक आता है, इस यंत्र को मकान के बाहर भी लिखते हैं और पास में रखने के लिए भी बनाया जाता है, वैसे तो लिखने का दिन दिवाली की रात्रि बताया है परन्तु आवश्यकता अनुसार जब चाहें लिख लें, और हो सके तो अमावस्या की रात्रि में लिखें जिससे यंत्र लाभदाई होगा, जब मृग मेष राशि की का भय उत्पन्न हुआ तो इस यंत्र के बांधने से मिट जायगा और दूसरी तरह के कष्ट होंगे तो वह भी इस यंत्र के प्रभाव से कम हो जायेंगे और सुख प्राप्त होगा इस यन्त्र को भोज पत्र या कागज पर या अष्टगंध से लिखना चाहिए और मकान की दीवार

॥ पुत्रोत्पत्तिदाता एकसो सितरिया यंत्र ॥४०॥

७७	८४	२	७
६	३	८१	८०
८३	७८	८	१
४	५	७६	८२

यह सोलह कोठे का एक सो सित्तरिया यन्त्र है इस यन्त्र के चार कोठे के अक गिनने से एक सो सित्तर का योगांक आता है, इसकी महिमा बहुत बताई है, यहा तक कहा है कि इसकी महिमा का वर्णन तुच्छ बुद्धि नहीं कर सकता धन प्राप्तिमे-जय-विजय में और पुत्र प्राप्ति के हेतु बनाना हो तो अष्ट गध से लिखना चाहिए भोज पत्र पर काला दाग न हो और स्वच्छ हो, कागज पर लिखें तो अच्छा कागज लेवें और शुक्लपक्ष की पूर्णा तिथि पचमी दशमी पूर्णिमा को अच्छा योग देख कर तैयार करे लेखनी चमेली की या सोने के नीब से लिखे और पास में रखें तो मनोकामना सिद्ध होगी और सुख प्राप्त होगा, धर्म पर पाबन्द रह पुन्योपार्जित करने से आशा शीघ्र फलती है इष्ट देव के स्मरण को नहीं भूलना।

एकसो सितरिया दूसरा यन्त्र ॥४१॥

४५	३९	५०	३६
४२	४७	३७	४४
३५	४९	४०	४६
४८	३३	५१	३८

यह एक सो सितरिया दूसरा यन्त्र भी सोलह कोठे का है, इस यन्त्र के चार कोठे के अंक को चाहे जिधर से गिनने से एक सो सित्तर का जोड़ांक आता है, लक्ष्मी प्राप्ति के हेतु जय विजय के निमित्त इस यन्त्र को भी काम में लेते हैं, गर्भ रक्षा और अन्य प्रकार की पीड़ा मिटाने के लिये इस यन्त्र को अच्छे दिन शुभ समय में अष्टगन्ध से भोजपत्र अथवा कागज पर लिखना चाहिए, एकसो सितरिये दोनों यन्त्र चमत्कारी हैं, नीति—न्याय पर चलना और इष्टदेव को स्मरण करते रहना जिससे यन्त्राधिष्ठायक देव प्रसन्न होकर मनोकामना सिद्ध करेंगे, यन्त्र मादलिये में रखे या मोम के कागज में लपेट कर पास में रखे।
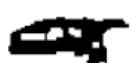
॥ व्यापार वृद्धि दोसौ का यंत्र ॥ ४२ ॥

९२	९९	२	७
६	३	९६	९५
९८	९३	८	१
४	५	९४	९७

यह सोलह खाने का दोसौ का यत्र है चार कोठे का अक को चाहे जिधर से गिन लें दोसौ का योगाक आयगा, इस यत्र के दो विधान हैं, पहला विधान तो यह है कि दीवाली के दिन अर्धरात्रि के समय सिंदूर या हिंगलु से दुकान के बाहर लिखे तो व्यापार की वृद्धि होती रहती है, दूसरा विधान यह है कि, इस यंत्र को भोजपत्र अथवा कागज पर पचगन्ध से लिखे जिसमें केसर, कस्तूरी, कपूर, गोरोचन, और चदन का मिश्रण हो, उत्तम पात्र में पचगंध रस तैयार कर चमेली की कलम से लिखे, यह यत्र विशेष कर दीवाली के दिन अर्धरात्रि के समय लिखना चाहिए, और ऐसा समय निकट नहीं हो और कार्य की आवश्यकता हो तो अमावस्या के अर्धरात्रि के समय लिखे और जिसके लिए बनाया हो उसी समय या प्रात काल

है ऐसे-यंत्र को पास में रखने से ऋतुबन्धी का स्राव नष्ट नहीं हुआ हो तो रुक जायगा गर्भ धारण करेगा और गर्भ रक्षा होगी इष्ट देव का स्मरण नित्य करना चाहिए।

॥ लक्ष्मी दाता पांचसौ का यंत्र ॥४१॥

२४२	२४९	२	७
६	३	२४६	२४५
२४८	२४३	८	१
४	५	२४४	२४७

इस पांच सौ के यंत्र के चार कोठे के अंक गिनने से पांच सौ की गिनती आती है, इस यंत्र को पास में रखने से लक्ष्मी प्राप्त होगी और एक चिराग इसका यह है कि पुत्र की इच्छा वाले पति पत्नि पास में रखें तो आशा फलेगी शुभ काम के लिये अष्ट गन्ध से लिखना और वैरी पराजय के हेतु यक्षकर्दम से लिखना चाहिए कलम चमेली की लेना और यंत्र को मादलिये में रख पास में रखना अथवा कागज में सफेद कर जेब में रखना धर्म के प्रताप से आशा फलेगी दान पुण्य करना धर्म निष्ठा रखना।

॥ सातसो चोवीसा यंत्र ॥४४॥

१८१	१८१	१८१	१८१
१८१	१८१	१८१	१८१
१८१	१८१	१८१	१८१
१८१	१८१	१८१	१८१

इस यत्र को एकसो इक्यासिया यत्र कहते हैं और सातसो चोबीसा भी कहते हैं चार कोठे के अक गिनने से सातसो चोबीस का योग आता है, यह यत्र प्रभाव बढाना है और राजमान समाजमान व व्यापारी वर्ग में आगेवानी प्राप्त कराता है। इस यत्र को अष्टगध से लिखना चाहिए और प्रातः काल धूप खेवना चाहिए, इस यत्र को वशीकरण यत्र भी कहते हैं, जिस कार्य के लिये उपयोग करना हो करे परन्तु नीति न्याय को नहीं छोड़े इस यत्र को चादी के पतडे पर तैयार कराकर प्रतिष्ठा करा पूजा करने से भी लाभ होता है, जिसको जैसा योग्य मालूम हो करा लेवे। धर्म पर श्रद्धा रखे इष्टदेव का स्मरण किया करे।

—o—

॥ लाखिया यंत्र ॥४५॥

४९९९२	४९९९९	२	७
६	३	४९९९६	४९९९५
४९९९८	४९९९३	८	१
४	५	४९९९४	४९९९७

यह लाखिया यन्त्र है इसके चार खानों के अंकोंको किसी भी तरफ से गिनने से लाख का योग आता है। इस यंत्रको लिखने के विधान इस प्रकार से बताये हैं।

(१) गोरोचन से लिख कर अपने पास रखने से अग्नि भय से बचाव होता है।

(२) जिन लोगों को अदालती में काम करना पड़ता हो और ऊपरी अधिकारी बारबार नाराज होते हों तो इस यंत्र को पंचगंध से लिखकर अपने पास रखे तो अधिकारी की कृपा रहती है।

(३) अक्सर कई जगह पति पत्नि के आपस में वैमनस्य होजाया करता है वह भी अल्प समय का हो तो दुख नहीं होता परन्तु बारबार क्लेश होता हो

तो इस यन्त्र को कुकुम से लिख कर पुरुष पास में रखे तो पत्नि के साथ प्रेम बढता है और शांति रहती है।

(४) इस यन्त्र को हलदी से लिखकर पास में रखे तो पत्नि के साथ पति का प्रेम बढता है।

अक्सर ऐसे यन्त्र दीवाली के दिन मध्य रात्रि में लिखते हैं और धन प्राप्ति अथवा दूसरे किसी काम के लिये बनवाना हो तो पचगध से लिखते हैं जिसमें केसर, कस्तूरी, चन्दन, कपूर, मिश्री का मिश्रण होना चाहिए।

॥ लाखिया यंत्र दूसरा ॥४६॥

४२०००	४९०००	२०००	७०००
६०००	३०००	४६०००	४५०००
४८०००	४३०००	८०००	१०००
५०००	५०००	४५०००	४७०००

यह दूसरा लाखिया यन्त्र है इस को भी दीवाली के दिन मध्य रात में लिखते हैं और अष्टगध से लिखकर यन्त्र जिसके लिये बनाया हो उसका नाम लिखकर पास में रखने से जय विजय होता

है। व्यवसाय करते समय जिस गादी पर बैठते हों उसके नीचे रखने से व्यवसाय में लाभ होता है, ऊपर बताया हुआ सालियाभद्र भी ऐसे कार्यों में लाभ देता है जिसको जो यन्त्र ठीक लगे उसी का उपयोग करे।

इस यंत्र का एक मंत्र भी है वह हमारे संग्रह में नहीं है, परन्तु विधान यह है कि दिवाली की मध्य रात्रि में यंत्र लिख कर उसके सामने एक पहर तक यंत्र का ध्यान करे। और फिर समय आये वनखंड में या बाग में अथवा जलाशय के किनारे बैठ कर यंत्र के सामने एक पहर तक मंत्र का ध्यान करे जिससे मंत्र सिद्ध हो जायगा क्रिया करते समय लोबान का धूप बराबर रखना चाहिए तो यन्त्र सिद्ध हो जायगा और भी इन दोनों यंत्र के कई चमत्कार हैं श्रद्धा रख कर इष्ट देव के स्मरण को करते रहना जिससे कार्य सिद्ध होगा।

॥ जय पताका यंत्र ॥४७॥

यह जय पता का यन्त्र है, जिसका महात्म्य इसके नाम पर से ही समझ सकते हैं, जो मनुष्य महात्माओं की कृपा प्राप्त कर लेता है उसी को इस यन्त्र की आम्नाय

मिलती है, सामान्य से इस यन्त्र के लिये कहा है कि इस

५१	८	५३	६४	१	४६	६९	६	७१
४६	४४	६२	१९	३७	५५	२४	४२	६०
३५	८०	१७	२८	७३	१०	३३	७८	१५
६६	३	४८	६८	५	५०	७०	७	५२
२१	३९	५७	२३	४१	५९	२१	४३	६१
३०	७५	१२	३२	७७	१४	३४	७९	१६
६७	४	४९	७२	९	५४	६५	२	४७
२२	४०	५८	२७	४५	६३	२०	३८	५६
३१	७६	१३	३६	८१	१८	२९	७४	१[illegible]

यन्त्र को पचगंध अथवा अष्टगंध से लिखे और किसी खास काम पर विजय प्राप्त करने के लिये बनाना हो तो यक्षकर्दम से लिखे, लिखते समय इक्यासी कोठे बनाकर चढ़ते अंक से लिखने की शुरुवात करे, जैसे प्रथम पंक्ति

के पांचवें कोठे में एक का अंक लिखे सातवीं लाइन के आठवें कोठे में दो का अंक लिखे, चौथी लाइन के दूसरे कोठे में तीन का अंक लिखे,सातवीं लाइन के दूसरे कोठे में चार का अंक लिखे, चौथी लाइन के पांचवें कोठे में पांच का अंक लिखे, प्रथम लाइन के आठवें कोठे में छे का अंक लिखे चौथी लाइन के आठवें कोठे में सात का अंक लिखे, प्रथम लाइन के दूसरे कोठे में आठ का अंक लिखे, सातवीं लाइन के पांचवें कोठे में नौ का अंक लिखे और तीसरी लाइन के छट्ठे कोठे में दश का अंक लिखे इस तरह से सम्पूर्ण यन्त्र को चढ़ते अङ्क से लिखकर पूर्ण कर और तैयार होजाने पर जिस मनुष्य के लिये बनाया हो उसका नाम व बाप का संक्षेप नाम यन्त्र के नीचे लिखे इस तरह से तैयार कर लेने बाद यन्त्र को एक पाटे पर स्थापन कर अष्ट द्रव्य से पूजा कर यथा शक्ति भेंट भी रक्खे और बहुमान से यन्त्र को लेकर पास में रक्खे तो कामयाब होता है नीति न्याय को नहीं छोड़ चारित्र शुद्ध रक्खे जिससे फल मिलेगा ।

॥ विजयपताका यन्त्र ॥४८॥

इस यन्त्र का लिखने का विधान जयपताका यन्त्र

४७	५८	६९	८०	१	१२	२३	३४	४१
५७	६८	७९	९०	११	२२	३३	४४	४६
६७	७८	८	१०	२१	३२	४३	५४	५६
७७	७	१८	२०	३१	४२	५३	५५	६६
९	१७	१९	३०	४१	५२	६३	६५	७६
१६	२७	२९	४०	५१	६२	७३	७५	५
२६	२८	३९	५०	६१	७२	८३	४	१५
३६	३८	४९	६०	७१	८२	३	१४	२५
३७	४८	५९	७०	८१	२	१३	२५	३५

की तरह समझना चाहिए, शेष इस यत्र में यह विशेषता है कि, प्रत्येक पक्ति के पाचवें खाने में अताक्षर एका है, चोथे में अनुस्वार और छट्ठी पक्ति के प्रत्येक खाने मे अताक्षर दो का अक है, आठवें कोठों में अताक्षर तीन का अंक है और दूसरे कोठों मे कहीं सात का कहीं छे का

का कहीं आठ का अंक अधिक बार आया है, इस यंत्र को विधी से लिखकर पास में रखने से विजय मिलती है, वाद विवाद करते समय, मुकदमे की बहस करते समय और संग्राम में अथवा इसी तरह के दूसरे कामों में प्रयास, प्रयाण, या प्रवेश किया जाय तब इस यंत्र को पास में रखने से सहायता मिलती है, इस यन्त्र का लेखन अष्टगंध पंचगंध, अथवा यक्षकर्दम से हो सकता है। बाकी विधान जय पताका यन्त्र की तरह समझ लेना, श्रद्धा से कार्य सिद्ध होता है, विजय पाते हैं, हिम्मत रखने से आशा फलती है।

॥ सङ्कट मोचन यंत्र ॥४६॥

११५	१४५	१५६	११२	१५४	१४३	१२७
११८	११६	१५१	१३१	१५२	१२६	१३७
१३३	१२४	११७	१२०	१ ४	१३५	१५६
१२१	१४०	१०४	११८	१४१	१४२	१४३
१४४	१११	१४५	१०६	११६	१४१	१४७
१०२	१४८	१४६	११६	१५०	१६०	१११

इस यत्र का जैसा नाम है वैसा ही गुण है शरीर अस्वस्थ होगया हो या और भी किसी प्रकार का कष्ट आगया हो तो यह यन्त्र काम देता है, इस यन्त्र में सबसे छोटा अंक एक सो पन्द्रह का है और बडा अक एक सो छप्पन का है इन दोनों अकों के दरम्यानी अंकों से यह यत्र बना है, प्रथम के कोने से अन्त के कोने तक एक सो पन्द्राह से एक सो इक्कीस के अङ्क हैं, दूसरे कोने के नीचे से एक सो बाइस से एकसो सत्ताइस तक के अंक हैं इस तरह की योजना मे पेट का दर्द डुटी या गोला खिसक गया हो तो उस समय अष्टगध से कासी की थाली में यत्र लिखकर धोकर पिलाने से दर्द मिट जाता है, इस तरह के विधान हैं सो समझ कर उपयोग करे।

॥ विजय यन्त्र ॥५०॥

इस यन्त्र को विजय यन्त्र कहते हैं और वर्द्धमान पताका भी कहते हैं, हमारे सग्रह में इसका नाम वर्द्धे- मान पताका है परन्तु इस यंत्र को विजय राज यत्र समझना चाहिए क्योंकि यही नाम इस यत्र के मन्त्र मे आया है।

७१	६४	६९	८	१	६	५३	४६	५१
६६	६८	७०	३	५	७	४८	५०	५२
६७	७२	६५	४	९	२	४९	५४	४७
२६	१९	२४	४४	३७	४२	६२	५५	६०
२१	२३	२५	३९	४१	४३	५७	५९	६१
२२	२७	२०	४०	४५	३८	५८	६३	५६
३५	२८	३३	८०	७३	७८	१७	१०	१५
३०	३२	३४	७५	७७	७९	१२	१४	१६
३१	३६	२९	७६	८१	७४	१३	१८	११

इस यन्त्र के नव विभाग हैं प्रत्येक विभाग में नौ कोठे हैं जो सर्व योग इक्यासी कोठों का होता है जिनमें एक से लेकर इक्यासी के अंक द्वारा खाना पूरी की गई है, जिसको लिखने का विधान इस तरह बताया है कि बीच के एक विभाग के नौ खानों का प्रथम के

बीच के खाने में एक अक लिख अनुक्रम से चढते अक लिखते जाना, फिर नीचे का नौवां विभाग लिखना फिर बीच का चोथा विभाग लिखना, फिर नीचे का सातवा विभाग लिखना, फिर मध्य का पाचवा विभाग लिखना, बाद में तीसरा विभाग लिखना फिर छट्ठा विभाग लिखना, फिर पहला विभाग लिखना और फिर आठवा विभाग लिखना-इस तरह से नौ विभाग के इक्यासी कोठों को भर देना, इस यत्र को रविवार के दिन लिखना चाहिए और ऐसा भी लेख है कि पुछ-ड़िया तारा उदय हो तब लिखना चाहिए, जब यन्त्र तैयार हो जाय तब एक बाजोट पर स्थापन कर धूप दीप की व्यवस्था जयणा सहित रख कर कुछ भेंट रखना और नीचे बताये हुए मन्त्र की एक माला फेरना,

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नम विजय यन्त्र राजय
धारकस्य ऋद्धि वृद्धि जय सुख सौभाग्य
लक्ष्मी मम सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

इस तरह की माला फेरते पचामृत मिश्रित शुद्ध वस्तुओं का हवन करना भी बताया है जिसको जैसा विधान ठीक मालुम हो उपयोग करे।

इस यन्त्र के नौ विभाग बताये प्रत्येक विभाग का

अलग २ यन्त्र भी बनता है जिसका वर्णन इस प्रकार है,

(१) प्रथम विभाग के यन्त्र से दृष्टि दोष शाकिनी, डाकिनी भूत, प्रेत आदि का भय नष्ट होता है।
(२) दूसरे विभाग के यन्त्र से अधिकारी आदि की प्रसन्नता रहती है।
(३) तीसरे विभाग के यंत्र से अग्नि भय सर्प का उपद्रव नष्ट हो जाता है।
(४) चौथे विभाग के यंत्र से ताव, एकांतरा, तिजारी आदि नष्ट होती है।
(५) पांचवें विभाग के यंत्र से मधमद पीड़ा आदि नष्ट होती है।
(६) छट्ठे विभाग के यन्त्र से विजय प्राप्त है।
(७) सातवें विभाग का यंत्र मंदिर आदि की ध्वजा पर लिखने से दिन २ उन्नति होती है।
(८) आठवें विभाग का यंत्र धनुष्य आदि शस्त्र पर बांधने से विजय पाते हैं।
(९) नौवें विभाग का यन्त्र दीपावली के दिन दुकान की दीवार पर लिखने से क्रय विक्रय होता है।

इस तरह से नौ विभाग के यन्त्रों का वर्णन है प्रथम विभाग अंक गिनती के अनुसार प्रथम पंक्ति के मध्य का समझना इसी तरह से दूसरा-तीसरा विभाग चढते अंकों से समझना चाहिए ।

इस यंत्र का दूसरा विधान इस प्रकार है कि विधि सहित यंत्र तैयार करके एकात स्थान में शुद्ध भूमि बना कर कुम्भ स्थापना कर अखड ज्योत रखे और एक चोकोर पाटिये पर यंत्र स्थापन कर सामने चोकोर पाटिये पर नदीवर्धन साथिया करे साथिया करने के चावल सवासेर देशी तोल के केसर से रगे हुए अखड हों उनसे साथिया पुर कर फल नैवेद्य और रुपया नारियल चढावें, फिर सामने बैठ कर साढ़े बारह हजार जाप मंत्र के पूरे कर लेवे नियमित जाप सख्या प्रतिदिन की एकसी हो इस तरह से विभाग कर जाप पाच दिन अथवा आठ दिन मे पूरा कर लेवे, जाप करने के दिनों में एकासना या आय-बिल तप कर जाप पहर दिन चढने से पहले पूरा कर लेवे भूमिशयन ब्रह्मचर्य पालन और आरभ का त्याग कर नित्य स्थापना स्थान में ही सो जावे जिस दिन जाप पूरे हों जाय साथिया में से चावल चमटी भर कर लेवे

और शिराये रख एक माला मंत्र की फर सो जावे तो रात्रि के समय स्वप्न में शुभाशुभ कथन देव द्वारा मालूम होंगे और धन वृद्धि होगी कार्य सिद्ध होगा, आस्था श्रद्धा से और पुन्य से फलती है पुन्य धर्म साधन मे उपार्जित होता है इसका पूरा ख्याल रखें।

॥ सिद्धा यन्त्र ॥ ५१ ॥

२५८	१
३११	२
४७०	३
३११	४
४७०	५
५८१	६
४७०	७
५८१	८
६१९	९
५८१	०

यह सिद्धायंत्र सटोरियों के काम का है, इस यन्त्र को पास में रखने की आवश्यकता नही है न धूप दीप रख कर मोम पत्र में लिखने की आवश्यकता है यह यंत्र तो जो इस गिनती के अनुभवी है उन्ही के काम का है जिस पुरुष को इसका उपयोग करना हो किसी जानकार से पूछ कर करे, अंक गणित जानने वाला इस गिनती को जल्दी समझ सकेगा। जानकारी म भी अनुभव की विशेषता हो वही लोग ऐसे यंत्रों से लाभ उठा सकते हैं और बिना अनुभव से कार्य करने वाला हानि उठाता है, इस बात को दृष्टिगत रखें।

॥ चोसठ योगिनी यंत्र ॥५२॥

यह चोसठ योगिनी यत्र है, कइ तरह के कार्य

४६	७	२०	३३	४४	५	१८	३१
२१	३४	४५	६	१९	३२	४३	४
८	४७	६०	५७	६२	५३	३०	१७
३५	२२	६३	५४	५९	५६	३	४२
४८	९	५८	६१	५२	४१	१६	२९
२३	३६	५१	६४	५५	२८	१३	२
१०	४९	३८	२५	१२	१५	४०	२७
३७	२४	११	५०	३९	२६	१	१४

सिद्ध करने में काम आता है, इस यत्र के लिखने में यह खुबी है कि एक का अक लिखे बाद दो का अक तिरछा एक कोठा बीच में छोड लिखा गया है इसी तरह से तमाम अक तिरछे कोठों में एक एक छोडते हुए लिखे हैं और अंत मे चोसठवे अंक पर समाप्ति की है, इस यत्र

की लेखन विधि को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए, और यंत्र लिख कर जिस कार्य की पूर्ति के लिये बनाया हो उसकी विगत और जिसके लिये बनाया हो उसका नाम यंत्र में लिखना चाहिए, जब मन्त्र विधि सहित तैयार हो जाय तब शुभ समय में पास में रखना और हो सके वहां तक कार्य सिद्धि तक चारण किये रखना धूप नित्य देने से मन्त्र का प्रभाव बढता है, कष्ट भी शीघ्र मिटता है और भावनाऐं फलती है इष्ट देव-देवी की पूजा करना और दान पुण्य की चेष्टा रखना सो कार्य सिद्ध होगा।

॥ दूसरा चोसठ योगिनी यंत्र ॥५२॥

इस यन्त्र में एक से लेकर चोसठ तक के अंक इस तरह से लिखे हुए हैं कि ऊपर के कोठों की सीधा और आड़ गणना करने से दोसो साठ का अंक आता है इस तरह से आठ कोठों की गिनती प्रत्येक लाइन की दोसो साठ आती है, लिखने में यह खूबी है कि एक कोठे का अंक अपने पास के दूसर कोठे में नजीक की गिनती के अंक लिये हुए है, इस तरह चोथी तरफ के दो काठों की

और दाहिनी तरफ के दो कोठों की लाइन में लेखन पद्धति है, बीच के चार कोठों में चार-चार अंक नजीक की गिनती वाले लिखे हैं, इस तरह से चोसठ योगिनी के स्थानों की पूर्ति कर यंत्र बनाया है, इस यंत्र की

७	८	५९	६०	६१	६२	२	१
१६	१५	५१	५२	५३	५४	१०	९
४२	४१	२२	२१	२०	१९	४७	४८
३३	३४	३०	२९	२८	२७	३९	४०
२५	२६	३८	३७	३६	३५	३१	३२
१७	१८	४६	४५	४४	४३	२	२४
५६	५५	११	१२	१३	१४	५०	४९
६४	६३	३	४	५	६	५८	५७

महिमा कम नहीं है, यह यन्त्र बहुत से कार्यों में काम आता है लिखने का विधान पूर्ववत् समझना चाहिए, इस यंत्र को तांबे के पतड़े पर बनवा कर पूजा करने से

भी लाभ होता है इष्ट देव की सहायता से कार्य सिद्ध होता है मनुष्य का प्रयत्न करने का काम है।

॥ उदय अस्त अंक माला यंत्र ॥५४॥

यह उदय अस्त अंक माला यन्त्र है इसका ज्ञान जिसको हो जाता है वह जान सकता है कि भाव क्या खुलेंगे और क्या बंद होंगे, इस यंत्र की गिनती किस प्रकार से करना—विद्वानों से सीखना चाहिए इस यंत्र की आम्ना गुरुगम से प्राप्त हो जाय तो कार्य सिद्ध होते देर नहीं लगती, इस यंत्र को द्रव्य प्राप्ति के हेतु चिन्तामणी यंत्र भी कहते हैं तो अतिशयोक्ति नहीं है, नसीब जोरदार होते हैं तो कार्य सिद्ध होते देर नहीं लगती यह यन्त्र विशेष करके सटोरियों के काम का है, इसकी गिनती का अभ्यास करने से जानकारी होगी इष्ट देव के स्मरण को नहीं भूलना दान पुन्य करने से इच्छायें फलती हैं।

लखिये यंत्र ॥१७॥ पार्श्व जिनेश्वर तणे पसाय, अलिय विघन सब दूर पलाय ॥ पडित अमर सुन्दर इम कहे, पूजे परमारथ सब लहे ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ यंत्र महिमा छंद का भावार्थ ॥

२०. बीसा यंत्र सोलह कोठे में लिखकर पास में रखने से तमाम तरह के भय का नाश होता है।

२८. अठ्ठाइसा यन्त्र रोग भय को नष्ट करता है।

३६. छत्तीसा यन्त्र द्युति सट्टा करने वाले लोग पास में रख कर करें तो विजय पाते हैं।

३० तीसा यन्त्र से शाकिनी भय नष्ट होता है।

३२. बत्तीसे यंत्र से कष्ट के समय उपयोग करने से सुखरूप प्रसव होता है।

३४. चोतीसा यन्त्र देव ध्वजा पर लिखा जाय तो शुभ कारक है, पर चक्र अथवा किसी के द्वारा भय प्राप्त होने वाला हो तो उसे मिटाता है, मकान के बाहर दीवार पर लिखने से पराभव नहीं होता कामण-टुमण का जोर नहीं चलता शाकिनी आदि पलायन हो जाती है

४० चालीसा यंत्र से सिर दर्द मिटता है, वैरी पांवों में गिरता है राज में दरगमे में मान-सम्मान बढ़ता है।

६२ बासठ के यंत्र से बंध्या स्त्री को गर्भ स्थिर होता है।

६४ चोसठिये यंत्र की महिमा बहुत है, मार्ग में सर्व प्रकार के भय को नष्ट करता है, वैरी के शाकिनी डाकिनी के भय से बच जाता है।

७२, बहत्तरिये यंत्र से भूत प्रेत का भय नष्ट होता है, और संग्राम में विजय पाता है।

७५, पिच्यासिये यन्त्र से मार्ग का भय मिटता है।

७८, अठोत्तरिया यंत्र तो शिव सुख पाता सर्वकष्ट को नष्ट करने वाला है।

९० निराोवरसो यंत्र बड़ा होता है जिससे प्रसव सुख रूप होता है वेदना मिटती है।

१२ बावन सो यंत्र को पानी से धोकर सुख धोवे तो भाई बाप-स्नेह बढ़ता है, भाई बहिन के आपस में प्रेम रहता है।

१७० एक सो सत्तरिये यंत्र की महिमा बहुत है इसका वर्णन तुच्छ बुद्धि मनुष्य नहीं कर सकता।

१७२. एक सो वहत्तरिया यत्र से वालक को लाभ होता है भय मिटता है।

२००. दोसो का यन्त्र दुकान के वाहर दीवार पर या मगलिक स्थापना के पास लिखने से व्यापार वहुत वढता है।

३००. तीन सो के यन्त्र से नर नारी का स्नेह वढता है, और टूटा हुवा स्नेह फिर से जुड जाता है।

४००. चारसो के यन्त्र से घर मे भय नहीं रहता, खेत पर लिखने से व लिख कर खेत में रखने से उत्पत्ति अच्छी होती है।

५००, पांच सो के यन्त्र से स्त्री को गर्भ धारण हो जाता है और साथ ही पुरुष भी वाधे तो सन्ततियोग वनता है।

६००. छे सो के यत्र से सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

७००. सात सो का यन्त्र वांधने से झगडे टंटो में विजय कराता है।

९००. नौ सो के यन्त्र से मार्ग में भय नही होता तस्कर भय मिटता है।

१०१० सहस्रिये यंत्र से पराजय-पराभव नहीं होता और विजय पाता है।

११०० ग्यारह सौ के यन्त्र से दुष्टात्मा की ओर से भय वगैरा होता हो तो वह मिट जाता है।

१२०० बारह सौ के यन्त्र से बंदीवान मुक्त हो जाता है।

१०००० दससहस्रिये यन्त्र से बंदीवान मुक्त हो जाता है।

५०००० पचास सहस्रिये यंत्र से राजमान मिलता है कष्ट मिटता है।

इस तरह मायोम कल्प का भावार्थ है इसमें बताये हुए बहुत से यंत्र हमारे संग्रह-साहित्य में नहीं हैं, लेकिन यन्त्र महिमा और उनसे होने वाले लाभ का पता इस भावार्थ से समझ में आ सकेगा जिनको लाभ इच्छा हो यंत्र शास्त्र के निष्णात से लाभ उठावें।

॥ मन्त्र संग्रह ॥

॥ धन वृद्धि मन्त्र ॥

ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्वजन-मोहिनी सर्व-कार्यकरणी-विघ्न-सकट हरणी, मम मनोरथ पूरणी, मम चिंता चूरणी, ॐ नमो ॐ पद्मावती नमः स्वाहा: ॥१॥

विधान—इस मन्त्र का जाप साडे बारह हजार करना चाहिए और त्रिकाल जाप करने का विधान है, अखड जोत धूप रखना शुद्ध भूमि शुद्ध वस्त्र और शरीर शुद्धि का पूरा ध्यान रखना आलम्बन में पद्मावती देवी का चित्र सामने रखना सफेद माला पूर्व दिशा की तरफ मुख रखना और एकाग्रता से जाप कर सिद्धि प्राप्त करना वैसे इस मन्त्र का सवालाख जाप भी करते हैं और त्रिकाल न बन सके तो प्रातः काल में ही अधिक सख्या में जाप किया जाय तो भी अच्छा है जैसा समय हो और अवकाश मिले तदनुसार करना चाहिए।

॥ रोजी-माप वृद्धि मंत्र ॥२॥

ॐ नमो भगवती पद्म पद्मावती ॐ ह्रीं श्रीं ॐ पूर्वाय दक्षिणाय पश्चिमाय उत्तराय आय पूरय सर्वजनवश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधान-इस मंत्र का सवालाख जाप करके सिद्धि प्राप्त करना और बाद में प्रातः काल में एक माला नित्य फेरना जिससे आय बढ़ेगी और बेकार को कार्य मिलेगा जाप करते समय ध्यान पद्मावती देवी का रखना चाहिए और अन्य विधान धूप दीप आदि पूर्ववत समझना ।

॥ ऋद्धि दाता मंत्र ॥३॥

ॐ पद्मावती पद्म नेत्रे पद्मासने लक्ष्मी दायिनी वाञ्छा पूरणी भूत-प्रेत निग्रहणी सर्वशत्रु संहारणी दुर्जन मोहिनी ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावत्येनमः स्वाहा ॥

विधान-इस मंत्र का सवा लाख जाप करना चाहिए जब जाप पूरा हो जाय तब गुग्गल गोरोचन छार छबीला, कपूरकाचरी, इन सबका चूरण कर गोलियां

बना लेनी और शनिवार अथवा रविवार की रात्रि को शरीर शुद्ध कर लाल वस्त्र पहिन कर लाल माला, लाल आसन और लाल वस्त्र पर स्थापना कर लाल माला से जाप पूरे करे ऐकेक मंत्र पूरा होते ही लाल पुष्प चढावे और एक गोली अग्नि पर रखे इस तरह से एक महिने तक बराबर करे, तो लक्ष्मी प्रसन्न होगी और आवक बढेगी अवलम्बन में लक्ष्मी देवी का चित्र रखना चाहिए इस तरह से एक महीना पूरा हो जाने बाद प्रात काल में ग्यारह या इक्कीस जाप नित्य करना चाहिए और मंत्र पूरा होतें ही स्वाहाः बोलने के साथ ही गोली अग्नि पर रख देना चाहिए, इस तरह करने से लक्ष्मी प्रसन्न होगी धन की आय बढ़ेगी और सुख शांति रहेगी।

॥ लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र ॥४॥

ॐ पद्मावती पद्मकुशी वज्रवज्रांकुशी प्रत्यक्ष भवन्ति भवन्ति स्वाहा ॥

विधान-इसमें भी आलम्बन में पद्मावती देवी का चित्र रखना चाहिए जाप अर्धरात्रि में करना और धूप दीप बराबर रखना-नित्य एक सहस्र जाप कर

इक्कीस हजार जाप पूरे करने बाद एक माला नित्य फेरना चाहिए धूप-दीप और शरीर-वस्त्र शुद्धि का पूरा ध्यान रखना ।

॥ अष्टाक्षरी मंत्र ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं नमः स्वाहा ॥

इस मंत्र को नवरात्रि में सिद्ध करना चाहिए, सिद्ध करने में जितने दिन लगें उतने दिन तक ब्रह्मचर्य पालना, एकासना करना, भूमि शयन करना सत्य बोलना, काम क्रोध कषाय का त्याग करना, और एकांत में धूप दीप अखंड रख कर साढे बारह हजार जाप पूरे करना और बाद में एक माला नित्य फेरने से सारा दिन आनंद में जायगा और रोजी मिलेगी ।

इस मंत्र का इक्कीस बार जाप कर व्याख्यान देने को बैठे तो श्रोता मोहित हों और इक्कीस जाप कर वाद विवाद करे तो जय प्राप्त हो इक्कीस जाप कर मुकदमे की जबाब देही करे तो तकरारी बोल न सके और विजय प्राप्त हो गांव या शहर में रोजी के निमित्त जाय तो गांव के बाहर जलाशय के पास बैठ कर इस

मंत्र की एक माला फेर कर प्रवेश करे तो लाभ मिले और कार्य की सिद्धि हो, इस मंत्र के सात वार जाप कर प्रत्येक जाप के साथ मुख पर हाथ फेरता जाय और शत्रु का नाम ले स्वाहा. बोलता जाय तो शत्रु पराजय होता है। सिर में दर्द होता हो तो इस मंत्र से इक्कीस वार सिर मन्त्रित करे तो दर्द मिटता है। इस मन्त्र मे इक्कीस वार पानी मन्त्रित कर पिलाने से पेट का दर्द मिटता है। इस मन्त्र का जाप करता जाय और राख लेकर उतारता जाय तो बिच्छु का जहर उतर जाता है, मार्ग में चलते जाप कर चले तो व्याघ्र आदि का भय नष्ट होता है। विशेष विधान गुरुगम से जान लेना।

॥ व्याख्या वृद्धि सरस्वती मंत्र ॥ ६ ॥

ॐ अर्हं मुखकमलवासिनी पापात्माक्षयकरी वद् वद् वाक्वादिनी सरस्वती ऐं ह्रीं नमः स्वाहा ॥

इस मन्त्र का एक लाख जाप करना चाहिए, और पूर्ण होने बाद दशांस होम करना हवन की सामग्री में दश वस्तु इस प्रकार लेना (१) नारियल खोपरे के टुकड़े (२) कपूर (३) खारक, (४) मिश्री, (५) गुग्गल, (६)

अगर, (७) रतांजली, (८) घृत, (९) गुड़, (१०) और चंदन, इनको मिश्रित कर हवन करना भूमिशयन, ब्रह्मचर्य पालना और विकार दृष्टि से नहीं देखना, जाप करने के दिनों में अंगशुद्धि, वस्त्र शुद्धि का ध्यान रखना, क्रिया बराबर हुई होगी तो स्वप्न में देव-देवी प्रत्यक्ष आकर वरदान देगा श्रद्धा से सिद्धि होती है, इस मन्त्र की सिद्धि होने बाद अभ्यास बहुत बढ़ेगा व्याख्यान देते समय मन्त्र का जाप कर शुरुआत करने से व्याख्यान कला बढ़ जायगी और वाक् शुद्धि होगी जिसको हवन करना पसंद नहीं हो वह दीप नैवेद्य फल चढ़ा कर जाप करे।

॥ सम्पत्ति दाता मंत्र ॥७॥

नमिऊण असुर सुर गरुल भुयंग परिवंदिये गयकिलेसे अरिहे सिद्धायरिय उवज्झाय सव्व साहूणं नमः ॥

इस मन्त्र का जाप नित्य एकसो इक्कीस बार उत्तर की तरफ मुख करके करना चाहिए धूप दीप रखनेसे मन्त्र की शक्ति बढ़ती है सो अवश्य सहित उपयोग से रखना जब जाप पूरा हो जाय तब इक्कीस नवकार गिन

लेना इस तरह करने वाले को तमाम तरह के भय नष्ट होंगे और धीरे धीरे आनन्द मंगल होता जायगा।

॥ विद्या सिद्धि मंत्र ॥८॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं, ॐ ह्रीं अर्हं आगासगामिणं ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनी भगवती सरस्वति ममविद्यासिद्धि कुरु कुरु॥

इस मन्त्र का अधिक जाप करने से ऐसा भास होगा कि जैसे आकाश में उड़ रहे हैं, जाप करके अष्ट द्रव्य से जिन भगवान की पूजन करना और सरस्वती देवी की पूजन करना-पूजन वासक्षेप से करें तो भी हो सकती है, जाप तो आखें बंद करके करना चाहिए जब पूरा हो जायगा जिस विद्या को सिद्ध करना हो तत्काल सिद्ध होगी, और आयुष्य का हाल मालूम होगा कष्ट का निवारण होगा,

॥ बटुक भैरव मंत्र ॥९॥

ॐ ह्रीं क्लीं क्रों क्रौं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ह्म्ल्व्र्यूं नम ॥

यह मन्त्र बहुत चमत्कारी है, क्रूरस्वभावी देव का

यह मन्त्र है सो शक्ति देख कर आराधन करना चाहिए एक माला नित्य फेरना और बली नैवेद्य चढ़ाना जब साढ़े बारह हजार जाप पूरे हो जांय तब विशेष पूजन करना और बली भेंट करना यदि क्रिया शुद्ध हुई होगी देव प्रत्यक्ष अथवा स्वप्न में आकर स्पष्ट उत्तर देगा निर्भयता से जाप करना और जाप के समय में कोई विघ्न आवे तो डरना नहीं निर्भय होकर जाप पूरा करना सो आशा फलेगी धर्म नीति दान पुण्य पर विश्वास रखना जिससे सिद्धि पा सकोगे।

॥ इति मंत्र संग्रह ॥
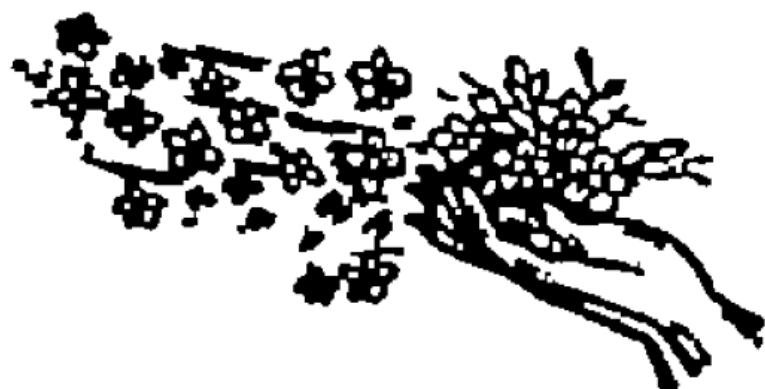
कल्प संग्रह

।। सह देवी कल्प ।।

सहदेवी का छोटासा झाड होता है जिसको जडी-बूटी में गिनते हैं, जहा पर सह देवी का झाड हो वहां शनिवार की रात को जाकर धूप देकर एक सुपारी पास में रख हाथ जोड विनती करना के हे देवी प्रात. काल में मैं तुझे मेरे यहा पधराऊगा, इस तरह कह कर स्व स्थान पर आ जाना, रविवार प्रात. काल होने से पहले जाकर फिर फल भेट कर नीचे लिखा मत्र इक्कीस बार पढे ।

ॐ नमो भगवती सहदेवी सद्वलहयानी
सद्वेवद्वकुरु कुरु स्वाहा ।

इस मंत्र से मत्रित कर जड सहित बाहर निकाले और मौनपणे निज स्थान पर आकर एक पाटले पर स्थापन कर धूप दीप कर फल भेट करे और फिर उसका रस निकाले और उस रसमें गोरोचन व केसर डाल कर गोली बनाले जब कभी काम हो-तब गोली को घिस कर

विवाद कर आवे जिससे वार्तालाप होगा वह मुग्ध हो जायगा और विजय मिलेगी।

सहदेवी की जड़ को हाथ के बांधने से रोग नष्ट होता है, इसके चूर्ण को गाय के घी में मिला कर पीने से बंध्या स्त्री गर्भ धारण कर सकेगी, प्रसव के समय कष्ट हो रहा हो तो इसको कमर पर बांधने से सुख से प्रसव होगा कंठमाल रोग में गले पर बांधने से कंठ माल रोग चला जायगा हाथ के बांध कर प्रस्थान करे तो जय पावे वैरियों में वाद विवाद करते इसके मूल को पास में रखे तो जय पावे इस तरह से सहदेवी का कल्प है, पुराने हस्त लिखित ग्रन्थों से उद्धृत कर प्रकाशन कराते हैं, इति सहदेवी कल्प।

॥ लोगस्स कल्प ॥

लोगस्स कल्प में जो मंत्र बताये गये हैं जिनका जाप-स्मरण साधू महाराज करे तो धूप दीप रखने की आवश्यकता नहीं है, पिछली रात्रि दो घड़ी बाकी रहे तब स्थिरता पूर्वक स्थिर आसन से या कायोत्सर्गासन खड़े रह कर कर सकते हैं यह स्मरण रहे कि कायोत्सर्गासन से शीघ्र लाभ होगा।

॥ संपत्ति प्रदान मन्त्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं लोगस्स उज्जोयगरे धम्मति-
त्थयरे जिणे अरिहन्ते कित्तयस्स चउव्विसं
पि केवलि ममममनोऽभीष्टं कुरु कुरु
स्वाहाः ॥ १ ॥

इस मन्त्र का जाप खडे रह कर करना चाहिये सम्पत्ति सुख के लिए श्वेत आसन श्वेत वस्त्र श्वेत माला और सामने चक्रेश्वरी देवी का आलम्बन रखे या नव पद यन्त्र रख कर करे धूप दीप जाप करते समय अखंड रखना और आलम्बन के सामने नैवेद्य फल भेट करना चाहिए ।

॥ मान पान संपत्ति सोभाग्यदाता मंत्र ॥

ॐ क्रॉं क्रीं ह्रा ह्रीं उसभमजियं च वन्दे
सभवमभिणंदणं च सुमइं च पउमप्पहं सुपासं
जिणं चंदपहं वन्दे स्वाहा ॥२॥

इस मत्र का जाप करना हो तो प्रथम कार्य का संकल्प कर लेना चाहिए और हो सके तो सात दिन के आयंबिल एक साथ कर एकात स्थान में इस मन्त्र का

इक्कीस हजार जाप पूरा कर यथा शक्ति देव को भेंट करे जहां तक कार्य सिद्ध न हो एक माला नित्य फेरनी चाहिए जिससे शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त होगी, वस्त्र आसन के लिए कोई खास विधान नहीं है परन्तु स्थापना और धूप दीप अवश्य रखना चाहिए।

॥ सप शुद्धि मंत्र ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं सुविहिं च पुप्फदंतं सियल सिज्जंस वासुपुज्जं च विमलमणंतं च जिणं धम्मं संतिंच वन्दामि कुंथु अरं च मल्लि वन्दे मुणिसुव्वयं च स्वाहा ॥ १ ॥

जब गृहस्थ के घर में कुसम्प हो जाय या परस्पर वैर पड़ जाय साधु समुदायमें अथवा गच्छमें-सम्प्रदायमें समाजे में कुसम्प हो जाय स्नेह संधी विच्छेद हो जाय और आंतर वैर जागृत होता रहे, परन्तु मुख की मिठास बढ़ती जाय और परोक्ष में निंदा होती जाय ऐसी स्थिति गृहस्थ या साधु समुदायमें उत्पन्न हो जाय तो यह मन्त्र विशेष काम देता है, इस मन्त्र का सवालाख जाप करना चाहिए और संकल्प कर हरुवाल करे दो बार या अधिक

जितनी माला नित्य फेरना हो संकल्प करते समय निश्चय कर लेवे और जहा तक जाप पूरा न हो न्युनाधिक माला न फेरे। जब जाप सम्पूर्ण हो जाय तब आलम्बन को सामने रख वा सक्षेप से उत्तर क्रिया करे और स्वाहा बोलते ही वासक्षेप चढावे इस तरह से क्रिया पूरी होने बाद एक माला नित्य फेरे कार्य सिद्ध होने बाद बद करे या न करे इच्छा पर है। इस मन्त्र के प्रभाव से सप बढेगा मान-पान में वृद्धि होगी परस्पर का वैरभाव मिटेगा जय विजय होगी और सम्पत्ति सुख का निवास होगा।

॥ सर्व भय कुटम्ब क्लेश पीडा हर मंत्र ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ममनमिजिण च वन्दामि रिट्ठ-
नेमिपासतहवद्धमाण च मनोवाञ्छित पूरय
पुरय स्वाहा· ॥४॥

किसी प्रकार का भय उत्पन्न हुआ हो गृहस्थी द्वारा साधू को सताप होता हो गृहस्थ को ससारिक कुटुम्ब या राजकाज आदि भय आपत्ति आने की सम्भावना हो तो यह मन्त्र सिद्ध करने से सर्वभय मिट जाते हैं, चतुर

विद्वान धर्मिष्ट की गिनती में आए हुवे मानवियों की ओर से ऐसे भय आवें तो पीले रंगकी माला से जाप करना चाहिए सामान्य क्रूर स्वभावी दुष्ट निर्दयी बेसमझ मानवी की ओर से भय आने की सम्भावना हो या आगया हो तो लाल रंग की माला से जाप करना चाहिए, इष्ट देव के स्मरण को न भूलें।

॥ अथ विजय वशीकरण मंत्र ॥

ॐ ह्रां ह्रीं एवंमए अभिथुआ विहुयरयमला पहीणजरमरणा चउविसंपि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु स्वाहा ॥४॥

जिस मनुष्य के लिये समुदाय में अप्रियता होगई हो कोई मानपानकी दृष्टि से न देखता हो और जहां जाय वहां पर अपमान होता हो, या बिना कारण ही कोई अपवाद बोलता हो तो इस मन्त्र के जाप से सिद्धि प्राप्त करना चाहिए जिससे सब कार्यों में जय विजय होगा और जो लोग विरुद्धता रखते हैं वह वश में आवेंगे स्नेह बढ़ेगा और शांति मिलेगी।

जाप संख्या व वस्त्र वर्ण का उल्लेख लिखा हुआ नहीं है जाप करने वाले अपनी बुद्धि से समझ लें

और शक्ति अनुसार करे, धर्माराधन व नीति न्याय को न छोडे इष्टदेव का स्मरण बराबर करता रहे जिससे सिद्धि होगी।

॥ समाधिशांति सुखदाता मंत्र ॥

ॐ ऑ अम्बराय किंत्तियवंदियमहिया जे लोगस्सउत्तमासिद्धा आरोग्ग बोहिलाभ समाहिवर मुत्तमदिंतु स्वाहा. ॥६॥

शरीर में वेदना हो और हाय हाय होती रहे, वेदना से अशाता की वृद्धि होती हो ऐसे समय में इस मत्र के जाप से शाति आजाती है, अशाता वेदनीय का उदय किसी समय इतना बढ जाता है कि शाति का आना कोसों दूर दीखने लगता है और जो भी कुछ समझाया जाय सुनाया जाय तो भी चित्त की स्थिरता नहीं हो पाती, और ऐसे समय में जिस मनुष्य को वेदनीय का उदय है वह तो इस मत्र का जाप करने के लिए शक्तिवान नहीं हो सकता तथापि पास वाले लोग बीमार को यह मत्र बारम्बार सुनाते रहें जाप करें और बीमार की शुद्धि हो तो वह भी कराता रहे जिससे

बेदमी होगा शांति आवेगी और आयुष्य सम्पूर्ण होने का समय आया होगा तो समाधि मरण होगा स्थिरता बढ़ेगी समकित शुद्ध होगा और भव भवितोगति के न्यास से सद्‌गति प्राप्त होगी।

॥ यश प्रतिष्ठा वृद्धि कर्ता मंत्र ॥७॥

ॐ ह्री ऐं श्रों क्ली क्ली चन्दे सु निम्मलयरा आइच्चेसुअहियंपयासरा सागरवरगंभीरा सिद्धासिद्धि मम दिसन्तु ममनोवाञ्छित पुरय पुरय स्वाहा ॥ ७ ॥

प्रत्येक मनुष्य को अपने अपन कार्य में यश प्रतिष्ठा की इच्छा रहती है गृहस्थ हो मुनि हो त्यागी हो योगी हो वकील हो व्यापारी हो—व्यवसायी हो सब निज कार्य में यश चाहते हैं और यश मिल जायगा तो प्रतिष्ठा तो अपने आप हो जाती है क्यों कि यश के बाद ही प्रतिष्ठा आया करती है इस लिए यश प्रतिष्ठा के इच्छुक आत्माओं को इस मन्त्र का जाप करना चाहिए यह अत्यन्त चमत्कारी है, जाप संख्या कितनी कहना यह निज मनोबल पर आधार रखता है विधान में संख्या का खुलासा नहीं है।

लोगस्स कल्प एक और देखने में आया है, जिससे अल्प अक्षरों के मत्र हैं और विशेषकर स्वप्ने शुभाशय दर्श आदि कार्य के है, लोगस्स कल्प जो प्रकाशित कराया जा रहा है यह सिद्ध हो जाय तो मनेच्छा पूर्ण होगी अत इस कल्प को यहीं समाप्त करते हैं।

॥ ऋणहर्ता मंगल कल्प ॥

॥ मंगल स्तुति ॥

रक्त मालायाबरधरो, शक्तिश्चूलगदाधर ।
चतुर्भुजो वृषगमो, वरदश्च धरासुत ॥ १ ॥
देहो हि भगवतभौम, कालकान्तहर प्रभो ! ॥
त्वयिसर्वमिद प्रोक्त, त्रैलोक्यसचराचर॥ २ ॥

॥ मंगल स्तोत्र ॥

मंगलो भूमिपुत्रश्च, ऋणहर्ता धनप्रद ॥
स्थिरआसनोमहाकाय', सर्वकर्मावरोधक. ॥१॥
लोहितोलोहिताक्षश्च, सामगानाकृपाकर' ॥
धरात्मज कुजोभौमो, भूतिदो भूमिनन्दन. ॥२॥
अ गारकोयमश्चैव, सर्वरोग प्रहारक. ॥
सृष्टि कर्तापहर्ता च, सर्वकार्यफलप्रद ॥३॥

॥ मंगलदेव नामानि ॥

१ मंगल २. भूमिपुत्र ३ ऋण हर्ता ४ धनप्रदाय ५ स्थिर आसनाय ६ महाकायाय ७ सर्व कर्मावरोध काय ८ लोहित ९. लोहिताक्ष १० सामगानां कृपा करायं ११ धरापुत्र १२. कुजाय १३. भौमाय १४ भूतदाय १५. भूमिनन्दनाय १६ अगारकाय १७ यमाय १८. सर्वरोगापहारकाय १९. सृष्टिकर्ता २० अपहर्त्रे २१ सर्वकार्यफलप्रदाय।

॥ मंगलदेव मूल मंत्र ॥

॥ ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः मंगलाय नमः ॥

॥ मंगलदेव विधान ॥

कुंकुमगन्धरताय, अमर्षवान देवाय ॥
कुजरेखात्रयधामे, वामपार्श्व वसेत्तुव ॥ १ ॥

॥ मंगलदेव स्तुति ॥

धरणीगर्भ सम्भूतं, रक्त माल्यांग रागं ॥
कनक कनक माले, साहित्यविरचयंतु ॥ १ ॥
प्रविलसित करांभ्यां विभ्रमंशक्ति मुखे ॥
भक्तविघ्नविमुक्त मंगलं मंगलानाम् ॥ २ ॥

॥ मंगलदेव अर्घ स्तुति ॥

भूमिपुत्र महातेज, स्तदोद्भव पिनाकिनः ॥
धनार्थी 'त्त्राप्रपन्नोस्मि, गृह्ण वर्म नमोस्तु ते ॥ १ ॥

॥ मंगलदेव आराधन विधान ॥

यह कल्प बहुत से कार्यों को पार लगाने में काम आता है परन्तु इसका नाम प्राचीन प्रत में "ऋणहर्ता मगल कल्प" लिखा है, और मगल देव के इक्कीस नाम जो स्तोत्र में बताये हैं उनमें तीसरे क्रम पर ऋणहर्ता नाम है इसलिए इस कल्प का नाम ऋणहर्ता मगल कल्प भी उचित है और वैसे जिस मनुष्य के विशेप ऋण हो गया हो और उसकी वृद्धि से मुक्ति न होनी हो तो ऋण उतारने में मगल देव की आराधना लाभदाई होती है मंगल देव यह नौ ग्रहों में से एक हैं और ज्योतिष शास्त्र में इनकी तेजस्विता व मगल लोक का स्वरूप बताया है जिससे सिद्ध होता है कि यह ग्रह विशेप पराक्रमी और तेजस्वी है। जब इसकी आराधना की जाय तब सामने आलम्बन में मगल देव की स्थापना ऊचे आसन पर करना चाहिए। आराधना करने के लिए

वस्त्र आसन और माला लाल रंग की लेना चाहिए, देव के चढ़ाने को लाल पुष्प नैवेद्य भी पके हुए फल का और लाल सुपारी चढ़ाना चाहिए, जब सब तरह से धूप दीप की तैयारी हो जाय तब देव के सामने हाथ जोड़ कर स्तुति के श्लोक जो आरम्भ में हैं बोलना चाहिए, स्तुति बोले बाद नमन नमस्कार करके मंगलदेव का स्तोत्र बोलना और स्तोत्र के अनुसार इक्कीस नाम बताये हैं उनको लक्ष्य में रखना और फिर मूल मंत्र का जाप करना जिसमें मंत्राक्षर बोल कर प्रथम बार मंगलाय नमः बोलना इस तरह से प्रत्येक मन्त्र में मन्त्राक्षर बोल कर दूसरी बार भूमिपुत्र नमः तीसरी बार ऋणहर्ता नमः चौथी बार धनप्रदाय नमः इस तरह इक्कीस नाम के आगे मन्त्राक्षर और नाम के बाद नमः पद लगा कर इक्कीस जाप करे अधिक करे तो एक बार दो बार तीन बार, चार बार करने से अनुक्रमे २१×४२×६३×८४ होंगे जब मन्त्र जाप पूरा हो जाय तब एक खैर की लकड़ी पहले से ही तैयार करा कर पास में रखे और निज के बांयी तरफ घुटने के पास खैर की लकड़ी से तीन लकीर खेंच कर लकड़ी हाथ में रख कर 'दुःखदुर्गम

नाशाय" विधान श्लोक को बोल कर लकडी रख देवे और बाये पांव की पगतली से तीनों लकीरों को मिटा देवे। इतनी क्रिया करने के बाद जो द्रव्य-वस्तु भेट करनी हो करे और फिर जल का कलश हाथ में रख अर्घ स्तुति बोल कर नमस्कार कर स्थापना विसर्जन करे। इस तरह से इक्कीस दिन तक करने के बाद बाइसवें दिन मन्त्रोच्चार में नम शब्द न बोले और प्रत्येक मन्त्र के साथ फट् स्वाहा बोल कर उत्तर क्रिया करे प्रत्येक फट स्वाहा. के साथ दशाग धूप का होम धूपदानी में करता रहे और इतनी क्रिया के बाद जिस कार्य के हेतु आराधना की हो देव के सामने सकल्परूप प्रार्थना करे और फिर नित्य इक्कीस जाप करता रहे सकल्प पूरा हो जाने पर बंध कर देवे इस तरह से मगल देव को आराधन करने का विधान है। अपने इष्ट देव को सान्निध्य समझ क्रिया करे श्रद्धा रखे धर्म नीति पर चले ब्रह्मचर्य पाले दान देवे और नियम वद्ध करे तो क्रिया फलती है।

आराधन करने के दिनों में आयबिल की तपस्या करे आयबिल नहीं हो सके तो कुछ दिन एकासना कुछ

दिन आयंबिल कर आराधन करे देवाराधन में तपस्या अवश्य करना चाहिए, जिससे सात्विक प्रकृति रहती है और शांति मिलती है, विशेष विधान गुरुगम से प्राप्त करे हमने तो जितना संग्रह किया है उतना ही प्रकाशित करा रहे हैं। अस्तु

॥ धम्मोमंगलमुक्किट्ठं कल्प ॥

धम्मो, मंगल, मुक्किट्ठं, अहिंसा, संजमो,
तवो, ॥

यह दशवैकालिक सूत्र की गाथा है, और ऊपर बताई हुई आधी गाथा का कल्प हमारे हाथ आया है प्राचीन प्रतके पिछले पृष्ठ नष्ट हो जाने से देख नहीं पाये अत: जितना संग्रह कर पाये हैं उतना ही प्रकाशित कराया जाता है।

इस गाथा में जो शब्द हैं जिनका भाव-अर्थ कल्प में इस तरह बताया है कि—

धम्मो—धारा मंगल—गंधक मुक्किट्ठं—तांबा
अहिंसा—कुवारपाठा संजमो—अगथिया
तवो—कालापतुरा

इस तरह छे शब्द द्वारा छे वस्तुऐं पारा, गधक, ताबा, कु वारपाठा, अगथिया, और काला धतूरा बताया गया ।

अगथिया दो तरह का होता है एक लाल पुष्प का, दूसरा पीले पुष्प का इसमें कौनसा लेना विधान में इसका खुलासा नहीं लिखा है।

प्रथम पारे को अगथिया के पुष्प के साथ पीसना चाहिए और नुगदी जैसा बना कर अलग रख लेना।

दूसरे गधक को कु वारपाठा के रस में बाटना और लुगदी बना लेना।

तीसरे ताबा सोटचका लेकर उसका चूरा करा लेवे और काला धतूरा जो पीले पुष्प का होता है उसके रस में खूब बांट लेवे ।

इस तरह से किये बाद तीनों की एक नुगदी बना लेवे और पीले पुष्प वाली मन्दार के रसमें सात दिन तक घोटता रहे जब घोटते घोटते सात दिन पूरे हो जाय तब नुगदी बना कर मिट्टी के दीवे-कोडिये में रख दोनों कोडियों पर मिट्टी लगा कर बध कर देवे और

फिर गज पुट की आंच देवे तो लगभग चार प्रहर में मात्रा तैयार हो जायगी। ठंडी होने पर कोडियों में से मात्रा निकाल लेवे, मात्रा शुद्ध बन गई होगी तो एक तोला तांबे के रस में एक रत्ती मात्रा असर कर जायगी, इस तरह का विधान है होना न होना नसीब पर है यह प्रयोग जैसा पाया है वैसा प्रकाशित करते हैं और साथ ही इतना अवश्य कहते हैं कि प्रत्येक क्रिया में गुरुगम की अति आवश्यकता है जो महात्माओं की सेवा करने से प्राप्त हो सकती है।

॥ सुवर्ण सिद्धि कल्प ॥

वर्तमान काल में कई बार सुना गया है कि सुवर्ण सिद्धि का प्रलोभन देकर घर का जेवर आभूषण या सोना मंगवा कर उसका दुगना कर देने की लालच देकर भोले जीवों को ठग जाते हैं और कई बार समझदार चतुर भी ऐसे फन्दे में आजाते हैं। और घर का धन खो बैठते हैं। हां ऐसे प्रयोग कई तरह के होते हैं जो पूर्व पुण्योदय से सिद्ध होते हैं, अतः लोभमें आकर

ठगों की ठग विद्या से सावधान रहना चाहिये।

सुवर्ण सिद्धि कल्प में से एक प्रयोग का वर्णन किया जाता है जिस को करने से पहले गुरुगम प्राप्त करना चाहिये।

प्रयोग करते समय पारा, लोहे का बुरादा, तावे का बुरादा, और सफेद सख्या वजन में बराबर लेकर आकके दूधमें सबकी एक साथ खरल करना, करते करते बारीक पीसते नुगदी तैयार हो जायगी जब नुगदी वन जाय तब अलग रख, मिट्टी का दीवा लेकर उस में एक तोला सुहागा पीसकर रख देना और उस के ऊपर नुगदी रखना। फिर एक तोला सुहागा नुगदी के ऊपर रखदेना और ऊपर दूसरा दीवा ढक देना, दोनों दिये पहले से घिस कर तैयार रखना चाहिये जिस से दोनों को मिलाते समय सधि में छेद न रहने पावे जब दिये तैयार होजाय तो एक दिये पर दूसरा दिया रख मजबूत तावे के तार से बाधदो, सधि पर कपडे की चींधी मुलतानी मिट्टी में भिगोकर लपेट दो ऊपर से फिर दो चींधी लगा मुलतानी मिट्टी से आच्छादित करलो और खूब मसल कर इसतरह वनालो कि वायुका सचार

नहीं होसके इस तैयार होनेवाला लेख तो है कि पच्चीस कंडे लगाना लेकिन कितने लगाना यह मिलकी बुद्धि उपर आधार रक्खा है। अब कंडे भाधे से कम जल जांय तब सम्पमें कपड़मिट्टी वाले डिब्बे का रख देना और चार घंटे तक अंदर रखना बाद में बाहर निकालना और धीरे धीरे खोलना मात्रा तैयार हुई होगी तो वह एक तोले शुद्ध तामरस में एक रत्ती मात्रा काम देगी। उपर के विधान में पारा आदि कितना लेना यह लिखा नहीं है किन्तु अनुमान स सब मिलाकर एक तोला वजन लेना चाहिए इस तरह से यह प्रयोग जैसा प्राप्त हुआ है वैसा ही प्रकाशित कराया जाता है, सिद्ध होना न होना नसीब पर आधार रखता है सुवर्ण पोरसे आदिकी सिद्धिका वर्णन शास्त्रों में श्रीपालजी के चरित्र में आता है उसे सुनते हुए यह तो मानना पड़ेगा कि सुवर्ण सिद्धि है जरूर परंतु प्राप्त होना भाग्याधीन है, धर्म नीति पर दृढ रहना इष्टदेव के स्मरण को नहीं भूलना।

उपर बताये हुए प्रयोग में एक पुस्तक में ऐसा भी देखा गया है कि संख्या पीछे रखना चाहिए इस बात का खुलासा ठीक तरह से तो इस विषय के निष्णात

॥ वीशा यंत्र कल्प ॥

अर्थात् –

॥ सात खाने का वीशा यंत्र ॥

वीशा यत्र कल्प–जिसके साथ विधान यत्र–और मंत्र का मिलना भाग्योदय से होता है। यत्र के साथ मत्र होने से आराधन करने वाले को जल्दी सिद्धि प्राप्त होती है, पहले यंत्र बना देते हैं इस को ठीक तरह से समझ लेना चाहिए।
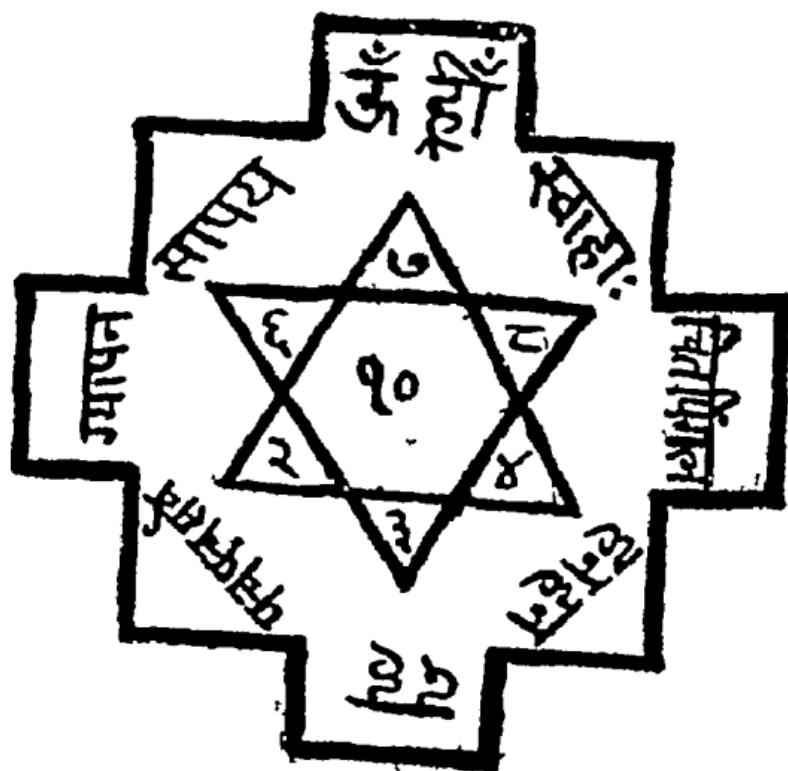
ऊपर बताये हुए यंत्र का आलेखन अष्टगंध से करना चाहिये और जब सब कोठे तैयार हो जाय तब बीच में जो यंत्र के सुखिया बताया है उसमें प्रथम बांयी तरफ के कोठे में दो का अंक लिखना फिर तीनका-चारका-छे-सात-आठ और दश का अंक लिख यन्त्र लेखन को पूरा किये बाद बाजु में मन्त्र लिखना मन्त्र—

ॐ ह्रीं चित्रपिंगल दह व्यापन हन हन
पच पच सर्व तापय स्वाहाः ।

इस मन्त्र को प्रथम ऊपर कोठे में से आरम्भ कर बताये मुताबिक लिखे जैसे ॐ ह्री लिखा बाद में दूसरे कोठे में चित्रपिंगल तीसरे से नीचे के कोठे में दह चोथे बांयी तरफ के कोठे में व्यापन लिखे और नीचे दाहिनी ओर के कोठों में हन हन लिख नीचे बांयी ओर के कोने में पच पच सर्व लिखे ऊपर के बांयी ओर के कोने में तापय लिखना और ऊपर के दाहिनी ओर के कोने में स्वाहाः लिखना इस तरह से यंत्र तैयार करना ।

सिद्धि प्राप्त करने के हेतु एक यंत्र ताम्रपत्र पर

लेखन विधान के अनुसार तैयार कराना और भोजपत्र या कागज पर लिखे हुए दस-बीस यत्र भी साथ रख सिद्ध कर लेना चाहिए सो बढे हुए यत्र किसी को देने में काम आवे, इस तरह की तैयारी के बाद आगे के विधान पर ध्यान देवें।

सिद्धि करते समय एकान्त जगह देखना चाहिए जहां जनता का आना जाना न हो और पीपल का वृक्ष हो उसके नीचे स्थापना-स्थानार्थ जगह शुद्ध करा लेना चाहिए और जीवत वाली भूमि भी नहीं होना चाहिए अखड ज्योत की रक्षा का ध्यान भी रखना उचित है, और इस तरह की तमाम क्रिया को शुद्ध मान से करा सके ऐसे दो सेवक अथवा सहायक को अवश्य रखना चाहिए, पीपल के पत्ते पर एक सो आठ वार यत्र मन्त्र सहित लिखना और पीपल की लकडी से घृत लगा कर पत्तों को रख देना, फिर मन्त्र का जाप करना-कितना करना यह विधान में बताया नहीं परन्तु अनुमान से सिद्धि करने वाले को समझ लेना चाहिए, फिर सामने एक कुंड जैसा बना पीपल की लकडिया कपूर से जला कर मत्र बोलते जाना और स्वाहा बोलते ही पत्र या

यंत्र लिखित पत्ता और पराग छोड़ते जाना इस तरह से चालीस दिन तक करना चाहिए, प्रयोग चले जिनमें केवल दूध या दूध की वस्तु ही पान करे गरम जल ठंडा किया हुआ पीये भूमि संथारा, ब्रह्मचर्य पाले और ऊनके वस्त्र पर शयन करे। जाप का समय पिछली रात्रि का है और हवन कैसे करना स्थापना बैठक आदि गुरुगम से प्राप्त कर सिद्ध साधक का जोड़ा होता है तापस सुवर्ण सिद्धि कर रहा था परंतु सिद्ध पुरुष की सान्निध्यता नहीं थी जिससे कार्य सिद्ध नहीं होता था जब भी भी पालकी महाराजा तत् स्थानमें खड़े रहे तो तत्काल सिद्धि होगई जिसका बयान शास्त्रों में आता है।

सिद्धि के समय शरीर व वस्त्र शुद्धि का ध्यान रखना चाहिए और आवश्यकीय अथवा विशेष वस्तु हित होकर काम करना है तो मन्त्र जाप त्रिकाल करना चाहिए संध्या का समय बराबर साधना और देव के फल नैवेद्य नित्यमेव करते रहना पुष्प गुलाब या मालतीके चढ़ाना इस तरह करते रात्रि में स्वप्न आवे जिसका ध्यान रखना और सिद्धि प्राप्त होने के बाद तो जब जाप हो यन्त्र को सामने रख एक माला फेर कर सो

जाने से शुभाशुभ फल और व्यापार के अक का भास होगा जिसे स्मरण रख शुभ कार्य करते रहना।

जो यत्र कागज भोज पत्र पर बनाये हैं उन में से एक निज के पास में रख कार्य करना सो लाभ होगा धर्म नीति श्रद्धा सयम नियम को कभी मत भूलना धर्म से ही विजय पा सकते हैं। अस्तु